RNI No.: UPHIN/2010/32733

ग्राम भारती

कृषि, ग्रामीण विकास, सहकारिता और पंचायती राज का पाक्षिक

लखनऊ, वर्ष 12, अंक 9, 16 अगस्त, 2021, पृष्ठ 36 मूल्य ₹ 25

75 वर्ष

स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव
एवं पंचायत विशेषांक

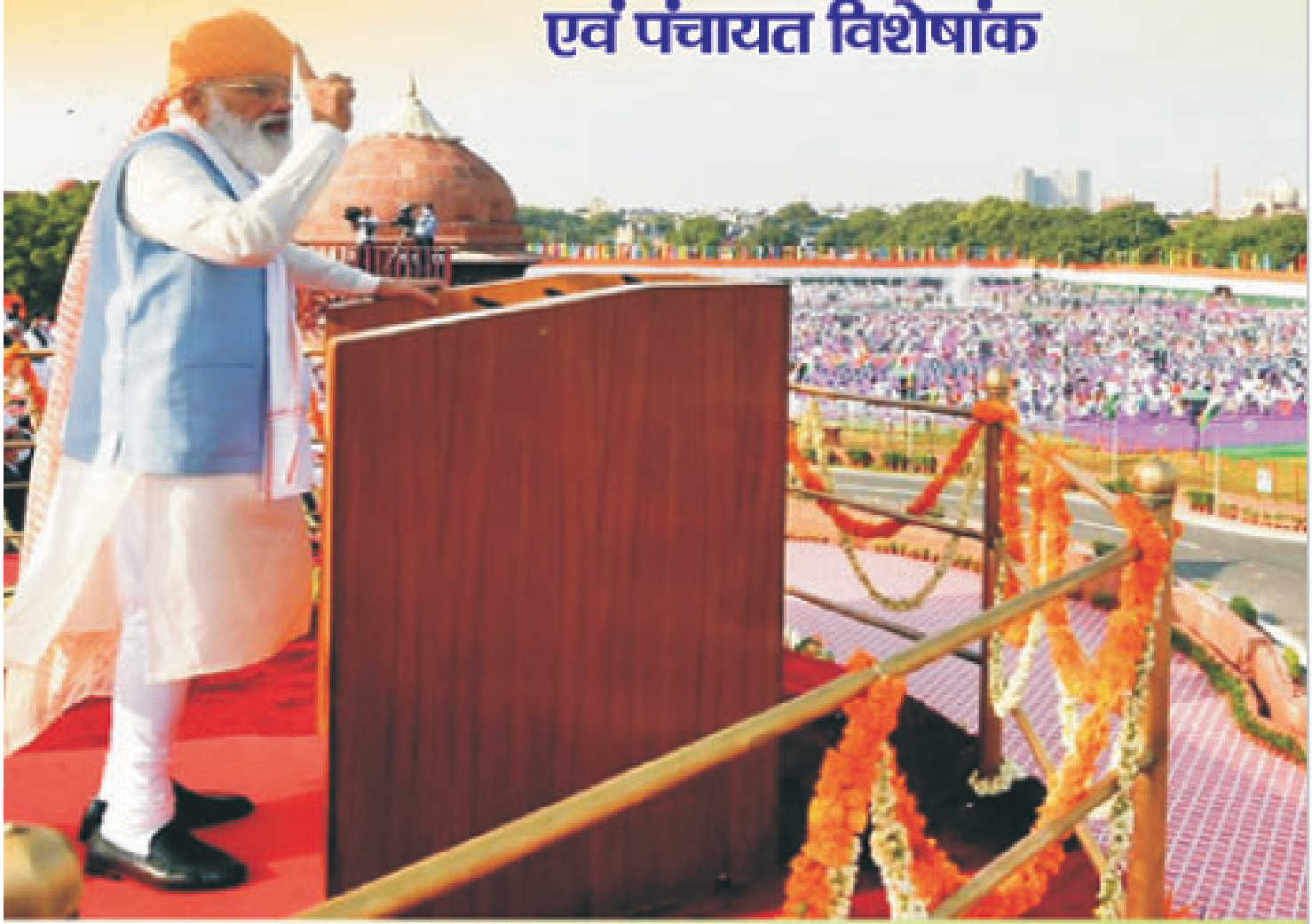

श्रेष्ठ भारत - सर्वोच्च भारत

मा. नरेन्द्र मोदी
प्रधान मंत्री
मा. योगी आदित्यनाथ
मुख्य मंत्री
मा. सुरेश खन्ना
मंत्री
मा. आशुतोष टण्डन
मंत्री
नगर पंचायत खुदागंज, शाहजहाँपुर
स्वतंत्रता दिवस पर सभी देशवासियों को
हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं
स्वच्छता हमारा मिशन
कोविड-19 को हराने के लिये
घर पर ही रहें-सुरक्षित रहें
बाहर निकलने पर मास्क का
प्रयोग अवश्य करें
सुधीर सिंह
अनुज कुमार रावत
अधिशासी अधिकारी
सुधा सुधीर सिंह
नगरपालिका अध्यक्ष

स्वतंत्रता दिवस पर सभी नगर वासियों को
हार्दिक बधाई व ढेर सारी शुभकामनाएं
उ0 प्र0 अल्पसंख्यक आयोग
के पूर्व अध्यक्ष
व भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता
डा. आशीष कुमार मैसी की
स्मृति हमारे हृदय में
बसती रहेगी, उनके आदर्श सैदेव हमारा मार्गदर्शन करतें रहेंगें।
एडवोकेट अंशुमान कुमार सिंह मैसी
एडवोकेट - हाईकोर्ट
चेयरमैन/निदेशक- एन.टी.आई.
सुपुत्र - स्व. डा. आशीष कुमार मैसी
मो. नं. 8755600000
INSTAGRAM - anshuman7massy#

ग्राम भारती

पाक्षिक

RNI NO.: UPHIN/2010/32733

(उ.प्र.समाचार सेवा का सहयोगी प्रकाशन)

वर्ष 12, अंक 9

स्वतंत्रता दिवस एवं पंचायत विशेषांक

संपादक

सर्वेश कुमार सिंह

पृष्ठ 36, मूल्य 25 रुपये

ग्राम भारती पाक्षिक के लिए स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक सर्वेश कुमार सिंह द्वारा माडर्न प्रिंटर्स, 10 घसियारी मण्डी, कैसरबाग, लखनऊ-226001 से मुद्रित एवं 103-117 प्रथम तल, प्रिंस काम्पलेक्स, हजरतगंज, लखनऊ-226001 से प्रकाशित।

Phone: 9453272129
WhatsAPP: 9140624166

ई-मेल: grambhartilko@gmail.com

अपनी बात	02
सम्पादकीय	03
श्रध्दांजलि	04
छोटा किसान बने देश की	05
समाचार सार	09
स्वतंत्रता आंदोलन में सीतापुर	10
आरक्षण मिले तो पार लगाएंगे	13
ब्लाक को देश में नंबर एक	15
शाहजहांपुर में ब्लाक प्रमुख की	16
जिला पंचायत अबयक्ष ने	17
प्रदेश का सर्वोत्म ब्लाक बनेगा	18
आजादी के अमृत महोत्सव	19
शब्दों की आहुति से प्रज्ज्वलित	23
स्वतंत्रता दिवस राष्ट्र अर्चन का	26
नौ अगस्त 1925 जिसने	29

अपनी बात

ग्राम भारती का यह विशेषांक विशिष्ट है। इस वर्ष स्वतंत्रता प्राप्ति के 74 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, हम स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। यह हमारी स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव है। इसलिए यह विशेषांक अमृत महोत्सव की भावना को समाहित करते हुए प्रकाशित हो रहा है। साथ ही इस विशेषांक को लोकतंत्र की प्राथमिक इकाई पंचायतों को समर्पित किया गया है। इसमें उत्तर प्रदेश में हुए पंचायत चुनावों पर विशेष सामग्री देकर इसे पंचायत विशेषांक का स्वरूप भी प्रदान किया गया है। देश के सबसे बड़े राज्य में सबसे ज्यादा पंचायत प्रतिनिधि चुनने वाले इस राज्य में पंचायत चुनाव लोकतंत्र के लघु उत्सव का दृश्य प्रस्तुत करते हैं। हमारे देश के लोकतंत्र की यह खूबी है कि इसमें सभी वर्गों, धर्मों, जातियों और समुदायों के साथ साथ महिला, पुरुषों को समान रूप से नेतृत्व का अवसर मिलता है। लोकतंत्र की यह प्राथमिक इकाई ही देश में नए नेतृत्व को जन्म दे रही है। पंचायत चुनाव ने उत्तर प्रदेश में महिलाओं के साथ साथ युवाओं को बड़ी संख्या में चुनकर गांव की सरकार में बैठाया है। इसलिए ग्राम भारती के इस विशेषांक को स्वतंत्रता दिवस के साथ साथ पंचायत विशेषांक के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास हुआ है। इस विशेषांक में ग्रामीण जन प्रतिनिधियों के साक्षात्कार और विशेष रिपोर्ट प्रस्तुत की गई हैं। विशेषांक संग्रहणीय बने यह भरसक प्रयास किया गया है। इसके बाद भी यदि कोई कमी रह गई हो तो पाठकों के सुझाव पर इसे आगामी अंकों में समाहित किया जाएगा। विशेषांक पर आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी। हम अपने सभी संवाददाताओं, विज्ञापनदाताओं का आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने इस अंक को प्रकाशित करने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया और हमारा साहस बढाया। हम उत्तर प्रदेश समाचार सेवा की राज्य भर की टीम का भी आभार व्यक्त करते हैं जिनके सक्रिय सहयोग से इसे प्रकाशित करने में हम सफल हुए हैं। विशेषांक कीत सफलता न केवल संपादकीय विभाग की सफलता है बल्कि यह समस्त पाठकों, ग्रामीण और पंचायत के जनप्रतिनिधियों की भी सफलता है। आपका स्नेह पूर्ववत् बना रहेगा। इस अपेक्षा के साथ, आपका

सर्वेश कुमार सिंह
संपादक

संपादकीय शताब्दी के लक्ष्यः श्रेष्ठ भारत-सर्वोच्च भारत

जन-जन की आकांक्षा के प्रतीक के रूप में भारत राष्ट्र को 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी साम्राज्य से स्वतंत्रता मिली। लम्बा संघर्ष हुआ। यह दूसरा स्वतंत्रता संग्राम था, जोकि लक्ष्य की परिणति तक पहुंचा। पहले स्वतंत्रता संग्राम जोकि 1857 में लड़ा गया, संघर्ष और अनेकों बलिदान के बाद भी सफलता नहीं मिली थी। अंग्रेजों ने बर्बरता के साथ इस स्वतंत्रता संग्राम को कुचल दिया था। लेकिन, हमारे पूर्वजों ने हार नहीं मानी और स्वाधीनता संग्राम की ज्वाला को जगाए रखा। अंग्रेज अधिकारी ए.ओ. ह्यूम द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद अंग्रेजों ने यह मान लिया था, कि अब हम लम्बे समय तक भारत पर शासन कर सकेंगे। लेकिन, प्रखर नेतृत्व से स्वाधीनता का आंदोलन आरंभ हुआ था। इस आंदोलन की धारा में ही नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गांधी सरीखे नेताओं के नेतृत्व और जनता के मन में बसी आजादी की उत्कट भावना ने कांग्रेस को अपार जन समर्थन प्रदान किया। दूसरी ओर क्रांतिकारियों के अभियानों और कार्यक्रमों ने अंग्रेजों को भयभीत कर दिया था। स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रेस के शांतिपूर्ण आंदोलन के साथ-साथ नेताजी की आजाद हिन्द फौज का संघर्ष. और क्रांतिकारियों की छापामार लड़ाई ने अंग्रेजों को मजबूर कर दिया था कि वे भारत छोड़ दें। अंततः हमें 1947 की 15 अगस्त को स्वतंत्रता मिल गई। आज हम अपनी स्वतत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने पर स्वतंत्रा का 'अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। इसलिए यह समय आजादी के 75 सालों के सिंहावलोकन के साथ ही आगे के लक्ष्यों को निर्धारित करने का भी है। हमें आज ही यह तय करना होगा कि जब हम स्वतंत्रता का शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे, तो हमारा भारत कैसा हो। ये लक्ष्य निर्धारित करके ही हम 2046 और 2047 के 15 अगस्त के स्वतंत्रता दिवसों की कल्पना करें। यह समय की मांग है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और इस भू-भाग की जनता ने खंडित आजादी की कल्पना नहीं की थी। हमारे पूर्वजों ने सम्पूर्ण भारतीय भू-मण्डल को स्वतंत्र कराकर एक सार्वभौम राष्ट्र की पुनर्स्थापना की कल्पना की थी। लेकिन, मिला क्या, खंडित भारत। खंड-खंड हो गए हमारे राष्ट्र की आत्मा 14 अगस्त 1947 को चीत्कार उठी थी, जब हमारी दो भुजाओं को काटकर इस धरा पर एक इस्लामिक राष्ट्र पाकिस्तान जन्मा था। यह घटना हमारी आकांक्षाओं के विपरीत तो थी ही, उन करोड़ों लोगों की आकांक्षाओं पर कुठाराघात भी था जोकि, पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के निवासी हो गए थे। उन्होंने तो आजादी मांगी थी, संघर्ष किया था, बलिदान किये थे। लेकिन. उन्हें बदले में क्या मिला। एक इस्लामी राष्ट्र की कट्टरता के अधीन रहने की गुलामी, जोकि अग्रेजों की गुलामी से भी बदतर थी। अब हम जब शताब्दी के लक्ष्य निर्धारित करें तो उसमें भारत की अखंडता और सार्वभौम एकता का विषय सर्वोपरि होना चाहिए। जो लोग पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान में रहे गए, किन्तु उनके मन और हृदय में भारत बसा है, उन्हें कैसे न्याय मिले। उन्हें भी आजादी का एहसास हो। इसकी चिंता भारत को ही करनी है। हमें निर्धारित करना होगा, कि कैसे हम 15 अगस्त 1946 से पहले कश्मीर के उस भूभाग को पुनः प्राप्त कर लें जिसे पाकिस्तान ने बलात् कब्जा करके अधिग्रहीत किया हुआ है। सर्वसमाज को शिक्षित करना, रोजगार, स्वास्थ्य की चिंता और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत सबल समाज की शक्ति खड़ा करना भी हमारे लक्ष्य हों। खेती-किसानी और गांव हमारे देश के प्राण हैं। हमें अपनी खेती उन्नत करने, किसान को पूर्ण स्वावलंबी बनाने, सम्पन्न और सक्षम बनाने के लक्ष्य भी निर्धारित करने होंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गत स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था, 'आत्मनिर्भर किसान ही आत्मनिर्भर भारत' का आधार है। इसे भी साकार करना है। किसान आत्मनिर्भर हुआ तो भारत आत्मनिर्भर हो जाएगा। साथ ही साकार होगा 'श्रेष्ठ भारत-सर्वोच्च भारत' का सपना।

श्रद्धांजलिः दिनेश चन्द्र त्यागी

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के सूत्रधार थे
हिन्दू महासभा के चार बार राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक थे

लखनऊ, (उ.प्र.समाचार सेवा)। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के सूत्रधार और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक दिनेश चन्द्र त्यागी नहीं रहे। श्री त्यागी हिन्दू महासभा के चार बार राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। उन्होंने २३ जुलाई २०२१ को अपरान्ह दो बजे मेरठ मेडिकल कालेज में अंतिम सांस ली। श्री त्यागी ७७ वर्ष के थे।

अमरोहा जनपद के मंडी धनौरा तहसील अन्तर्गत ग्राम पेली तगा गांव में वर्ष १९४३ में एक संपन्न कृषक परिवार में जन्मे श्री त्यागी की प्रारम्भिक शिक्षा गांव के प्राइमरी स्कूल मे हुई। इसके उपरान्त उन्होंने धनौरा, चांदपुर, इलाहाबाद और बडौत में शिक्षा ग्रहण की। वे भौतिकी में परास्नातक थे। उन्होंने स्नातक की शिक्षा विज्ञान वर्ग में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राप्त की। यहीं श्री त्यागी संघ के सरसंघचालक रहे प्रो.राजेन्द्र सिंह उर्फ रज्जू भैया के संपर्क में आये और संघ से जुड़ गए। श्री त्यागी सात भाई और एक बहन के भरे पूरे परिवार से थे। वे वर्ष १९७० में मेरठ में संघ के प्रचारक बन गए थे। इसके बाद संघ में वे मेरठ महानगर प्रचारक, मुरादाबाद जिला प्रचारक, विभाग प्रचारक और पश्चिम उत्तर प्रदेश हिन्दू जागरण मंच के संयोजक रहे।

उन्होंने विभाग प्रचारक रहते हुए ही कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दाऊदयाल खन्ना को जोड़ा और श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन की भूमिका तैयार की। उनकी प्रेरणा से ही श्री दाऊदयाल खन्ना ने आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। श्रीराम जन्मभूमि का ताला खोलने के लिए शुरु हुए आन्दोलन के लिए बनी श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के वे संयुक्त सचिव रहे। इस समिति के अध्यक्ष दाऊ दयाल खन्ना और महासचिव महंत अवैद्यनाथ थे। श्री त्यागी हिन्दू महासभा में भी रहे। वे महासभा के चार बार राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। उन्होंने वर्ष १९८४ में मुरादाबाद लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव भी लड़ा था। विगत करीब एक माह से उनका स्वास्थ्य खराब था। स्व. दिनेश चन्द्र त्यागी का अंतिम संस्कार २४ जुलाई को मुरादाबाद में लोकोशेड स्थित श्मसान में हुआ।

श्रद्धांजलि देने पहुंचे विहिप अध्यक्षः स्व त्यागी को श्रद्धांजलि देने विश्व हिन्दू परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री आलोक कुमार मुरादाबाद पहुंचे। उन्होंने ५ अगस्त को श्रद्धांजलि सभा में भाग लिया। श्री कुमार ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए स्व. दिनेश चन्द्र त्यागी के राम मन्दिर आंदोलन में योगदान का स्मरण किया। शोक सभा में विधान परिषद् सदस्य डा. जयपाल सिंह व्यस्त ने स्व. दिनेश जी के जीवन औरें व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिन्दू समाज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और रामजन्मभूमि मन्दिर आंदोलन के लिए दिनेश जी का समर्पण अद्वितीय था। श्रद्धांजलि सभा में देशभर के अनेक हिन्दू नेता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए।

दिनेश जी को सादर नमन।

छोटा किसान बने देश की शानः नरेन्द्र मोदी

अमृत महोत्सव पर शताब्दी के लक्ष्य और संकल्पों की सिध्दि का आहवान

नई दिल्ली, 15 अगस्त 2021 (पीआईबी) स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से देश के सामने अगले पच्चीस साल में प्रगति के लक्ष्य और संकल्प प्रस्तुत किये हैं। स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्र के नाम संदेश में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा हम जब देश की स्ववतंत्रता के सौ वर्ष पूरे होने पर समारोह मना रहे होंगे तो भारत हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होगा। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि छोटा किसान बने देश की शान यह हमारा सपना है। उन्होंने कहा आजादी के अमृत महोत्सव, 75वें स्वतंत्रता दिवस पर आप सभी को और विश्वभर में भारत को प्रेम करने वाले, लोकतंत्र को प्रेम करने वाले सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। राष्ट्र पूज्य बापू, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद,बिस्मिल और अश्फाक उल्ला खान जैसे महान क्रांतिवीर, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कित्तूर की रानी चेन्नम्मा, असम में मातंगिनी हाजरा, देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू जी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, बाबा साहब आम्बेडकर आदि सभी महापुरुषों का रिणी है। श्री मोदी ने कहा ओलंपिक में भारत की युवा पीढ़ी ने भारत का नाम रोशन किया है। ऐसे हमारे एथलीट्स, हमारे खिलाड़ी आज हमारे बीच में है। एथलीट्स ने हमारा दिल ही

नहीं जीता है, बल्कि भारत की युवा पीढ़ी को प्रेरित करने का बहुत बड़ा काम किया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अब से हर वर्ष 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में याद किया जाएगा। आजादी के 75वें स्वतंत्रता दिवस पर विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस का तय होना, विभाजन की त्रासदी झेलने वाले लोगों को हर भारतवासी की तरफसे आदरपूर्वक श्रध्दांजलि है। श्री मोदी ने कहा कि आज हम गर्व से कह सकते हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सिनेशन प्रोग्राम हमारे देश में चल रहा है। 54 करोड़ से ज्यादा लोग वैक्सीन डोज लगा चुके हैं। महामारी के समय भारत जिस तरह से 80 करोड़ देशवासियों को महीनों तक लगातार मुफत अनाज देकर के उनके गरीब के घर के चूल्हे को जलते रखा है। सारे प्रयासों के बाद भी कितने ही लोगों को हम बचा नहीं पाए हैं। कितने ही बच्चों के सिर पर हाथ फेरने वाला चला गया। उसे दुलारने, उसकी जिद्द पूरी करने वाला चला गया। ये असहनीय पीड़ा,ये तकलीफ हमेशा साथ रहने वाली है। देश की आजादी के 75 वर्ष ये अमृतकाल है। इस अमृतकाल में हमारे संकल्पों की सिध्दि, हमें आजादी के सौ वर्ष तक ले जाएगी। अमृतकाल का लक्ष्य है एक ऐसे भारत का निर्माण जहां दुनिया का हर आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर हो। अमृतकाल 25 वर्ष का है। लेकिन हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये इतना लम्बा इंतजार भी नहीं करना है। सबका साथ,सबका विकास, सबका विश्वास और अब सबका प्रयास हमारे हर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये बहुत महत्वपूर्ण है।

इंडिया एट 75: देश की आजादी के 75 वर्ष ये अमृत काल हैं। इस अमृत काल में हमारे संकल्पों की सिदिदध, हमें आजादी के सौ वर्ष तक ले जाएगी। अमृत काल का लक्ष्य है एक ऐसे भारत का निर्माण जहां दुनिया का हर आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर हो। अमृत काल 25 वर्ष का है। लेकिन हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये इतना लम्बा इंतजार भी नहीं करना है। सबका साथ,सबका विकास, सबका विश्वास और अब सबका प्रयास हमारे हर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं।

पहले की तुलना में हम बहुत तेजी से बहुत आगे बढ़े हैं। लेकिन हमें सैचुरेशन तक जाना है, पूर्णत: तक जाना है। शत-प्रतिशत गांवों में सड़कें हों, शत-प्रतिशत परिवारों के बैंक अकाउंट हों, शत-प्रतिशत लाभार्थियो को आयुष्मान भारत का कार्ड हो, शत-प्रतिशत पात्र व्यक्तियों को उज्ज्वला योजना और गैस कनेक्शन हों। जल जीवन मिशन के सिर्फ दो वर्ष में साढ़े चार करोड़ से ज्यादा परिवारों को नल से जल मिलना शुरू हो गया है। दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों, सामान्य वर्ग के गरीबों के लिए आरक्षण सुनिश्चित किया जा रहा है। अभी हाल ही में मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में, आल इंडिया कोटे में ओबीसी वर्ग को आरक्षण की व्यवस्था भी की गई है। संसद में कानून बनाकर ओबीसी से जुड़ी सूची बनाने का अधिकार राज्यों को दे दिया गया है। सभी के सामर्थ्य को उचित अवसर देना, यही लोकतंत्र की असली भावना है। जम्मू-कष्ठमीर में Delimitation कमीशन का गठन हो चुका है और भविष्य में विधानसभा चुनावों के लिए भी तैयारियां चल रही हैं। लद्दाख भी विकास की अपनी असीम संभावनाओं की तरफ आगे बढ़ चला है।

Deep Ocean Mission: समंदर की असीम संभावनाओं को तलाष्ठाने की हमारी महत्वाकांक्षा का परिणाम है। जो खनिज संपदा समंदर में छिपी हुई है, जो thermal energy समंदर के पानी में है, वो देश के विकास को नई बुलंदी दे सकती है। देश में 110 से अधिक

आकांक्षी जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, सड़क, रोजगार से जुड़ी योजनाओं को प्राथमिकता दी जा रही है। अर्थजगत में भारत सहकारवाद पर बल देता है। आज हम अपने गांवों को तेजी से परिवर्तित होते देख रहे हैं। बीते कुछ वर्ष, गांवों तक सड़क और बिजली जैसी सुविधाओं को पहुंचाने रहे हैं। अब गांवों को आप्टिकल फाइबर नेटवर्क, डेटा की ताकत पहुंच रही है, इंटरनेट पहुंच रहा है।

देश के हर क्षेत्र में हमारे देश के वैज्ञानिक बहुत सूझ-बूझ से काम कर रहे हैं। हमें अपने खनिज क्षेत्र में भी वैज्ञानिकों की क्षमताओं और उनके सुझावों को शामिल करना होगा। इससे देश को खाद्य सुरक्षा देने के साथ फल, सब्जियां और अनाज का उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ी मदद मिलेगी।

छोटा किसान बने देश की शान, ये हमारा सपना है। आने वाले वर्षों में हमें देश के छोटे किसानों की सामूहिक शक्ति को और बढ़ाना होगा। उन्हें नई सुविधाएं देनी होंगी।

देश के 80 प्रतिशत से ज्यादा किसान ऐसे हैं, जिनके पास 2 हेक्टेयर से भी कम जमीन है। पहले जो देश में नीतियां बनीं, उनमें इन छोटे किसानों पर जितना ध्यान केंद्रित करना था, वो रह गया। अब इन्हीं छोटे किसानों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लिए जा रहे हैं। आज देश के 70 से ज्यादा रेल रूटों पर, किसान रेल चल रही है। छोटे किसान, किसान-रेल के जरिए अपने उत्पाद ट्रांसपोर्टेशन के कम खर्च पर, दूर-दराज के इलाकों में पहुंचा सकते हैं।

गांवों में जमीनों के कागज पर कई-कइ पीढ़ियों से कोई काम नहीं हुआ है। खुद जमीन के मालिक होने के बावजूद जमीन पर उनको बैंकों से कोई कर्ज नहीं मिलता है। इस स्थिति को बदलने का काम आज स्वामित्व योजना कर रही है।

देश ने संकल्प लिया है कि आजादी के अमृत महोत्सव के 75 सप्ताह में 75 वंदेभारत ट्रेनें देश के हर कोने को आपस में जोड़ रही होंगी। भारत को आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ ही इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण में होलिस्टिक अप्रोच अपनाने की भी जरूरत है। भारत आने वाले कुछ ही समय में प्रधानमंत्री गतिशक्ति-नेशनल मास्टर प्लान को लान्च करने जा रहा है। मैन्यूफैक्चरिग और एक्सपोर्ट-विकास के पथ पर आगे बढ़ते हुए भारत को अपनी मैन्यूफैक्चरिग और एक्सपोर्ट, दोनों को बढ़ाना होगा।

आज देश के पास 21वीं सदी की जरूरतों को पूरा करने वाली नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' भी है। जब

गरीब की बेटी, गरीब का बेटा मातृभाषा में पढ़कर प्रोफेशनल्स बनेंगे तो उनके सामर्थ्य के साथ न्याय होगा। नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' को गरीबी के खिलाफ लड़ाई का मैं साधन मानता हूं। नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' में गरीबी के खिलाफ लड़ाई का साधन भी है। ये नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने का एक बहुत बड़ा शस्त्र बनने जा रहा है। गरीबी से जंग जीतने का आधार भी मातृभाषा की शिक्षा है। आज मैं एक खुशी देशवासियों से साझा कर रहा हूँ।

दो-ढाई साल पहले मिजोरम के सैनिक स्कूल में पहली बार बेटियों को प्रवेश देने का प्रयोग किया गया था। अब सरकार ने तय किया है कि देश के सभी सैनिक स्कूलों को देश की बेटियों के लिए भी खोल दिया जाएगा। 370 को बदलने का ऐतिहासिक फैसला हो, देश को टैक्स के जाल से मुक्ति दिलाने वाली व्यवस्था हो, हमारे फौजी साथियों के लिए वन रैंक वन पेंशन हो, या फिर रामजन्मभूमि केस का शांतिपूर्ण समाधान, ये सब हमने बीते कुछ वर्षों में सच होते देखा है।

त्रिपुरा में दशकों बाद ब्रू रियांग समझौता होना हो, ओबीसी कमीष्ठान को संवैधानिक दर्जा देना हो, भारत अपनी संकल्पशक्ति लगातार सिदध कर रहा है।

> देश के हर क्षेत्र में हमारे देश के वैज्ञानिक बहुत सूझ-बूझ से काम कर रहे हैं। हमें अपने खनिज क्षेत्र में भी वैज्ञानिकों की क्षमताओं और उनके सुझावों को शामिल करना होगा। इससे देश को खाद्य सुरक्षा देने के साथ फल, सब्जियां और अनाज का उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ी मदद मिलेगी।

आज कोरोना के इस दौर में, भारत में रिकार्ड विदेशी निवेश आ रहा है। आज दुनिया, भारत को देख रही है और इस चुनौती के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। एक आतंकवाद और दूसरा विस्तारवाद। भारत इन दोनों ही चुनौतियों से लड़ रहा है और सधे हुए तरीके से बड़े हिम्मत के साथ जवाब भी दे रहा है। आज देश के महान विचारक श्री अरबिंदो की जन्मजयंती भी है। साल 2022 में उनकी 150वां जन्मजयंती है, वो कहते थे कि- हमें उतना सामर्थ्यवान बनना होगा, जितना हम पहले कभी नहीं थे। हमें अपनी आदतें बदली होंगी। मैं भविष्यदृष्टा नहीं हूं, मैं कर्म के फल पर विश्वास रखता हूं। मेरा विश्वास देश के युवाओं पर है। मेरा विश्वास देश की बहनों-बेटियों, देश के किसानों, देश के प्रोफंशनल्स पर है। ये हर लक्ष्य हासिल कर सकती है। मुझे विश्वास है कि जब 2047, आजादी का स्वर्णिम उत्सव होगा, उस समय जो भी प्रधानमंत्री होंगे, वे अपने भाषण में जिन सिदिधयों का वर्णन करेंगे वो सिदिधयां वही होंगीं जो आज देश संकल्प कर रहा है ये मेरा विश्वास है। राष्ट्र प्रथम, सदैव प्रथम-21वीं सदी में भारत के सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने से कोई भी बाधा रोक नहीं सकती। हमारी ताकत हमारी एकजुटता है। हमारी प्राणशक्ति, राष्ट्र प्रथम, सदैव प्रथम की भावना है।

समाचार सार/गतिविधियां

डिजीटल नवाचार में कुमुद मिश्रा पुरस्कृत

लखनऊ। (उ.प्र.समाचार सेवा)। कोरोना काल में डिजीटल लर्निंग में नवाचार (खोज) करने वाले शिक्षकों में लखनऊ के ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय प्राथविक विद्यालय गौरा मोहनलालगंज की शिक्षिका कुमुद मिश्रा पुरस्कृत की गई हैं। कुमुद मिश्रा को प्रोत्साहन स्वरूप एक लाख रुपये की धनराशि दी गई है। प्रदेश में 27 हजार में से 116 परिषदीय शिक्षकों को यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर काम करने और इस क्षेत्र में नवाचार अपनाने के लिए ग्लोबल सेंटर आॅफ नॉलेज एण्ड डेवलपमेंट के वीआई स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अन्तर्गत यह एक-एक लाख की प्रोत्साहन राशि दी गई है। इस स्कॉलरशिप के लिए जिज्ञासा प्रोग्राम चलाया गया। इंटरव्यू के बाद सफल परिषदीय शिक्षकों की सूची जारी की गई। प्राथमिक विद्यालय गौरा की सहायक अध्यापिका कुमुद मिश्रा ने शिक्षा में बदलाव की नई

> शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर काम करने और इस क्षेत्र में नवाचार अपनाने के लिए ग्लोबल सेंटर आॅफ नॉलेज एण्ड डेवलपमेंट के वीआई स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अन्तर्गत यह एक-एक लाख की प्रोत्साहन राशि दी गई है।

मिसाल पेश की है। कुमुद मिश्रा ने बताया कि गुरुशाला के अन्तर्गत शिक्षकों को टीएलएम यानि पढ़ाने के ऑनलाइन साधनों के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाता है। बच्चों को यदि कोई ऑन लाइन सामग्री भेजनी है तो उसमें किन संकेतों का उपयोग कर शिक्षक सामग्री को रोचक बनाया जा सकता है। हमने ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान इसी तरह की टीएलएम साम्रगी का उपयोग करते हुए इसमें कार्टून की मदद लेकर विषय या पाठय सामग्री को रोचक बनाया और वह बच्चों को रुचिकर लगा। हमें गुरुशाला पोर्टल और आईसीटी ट्रेनिग का पूरा लाभ मिला। उन्होंने कहा तकनीकि शिक्षा के प्रति बच्चों का रुझान तेजी से बढ़ा है।

ग्राम भारती

कृषि और ग्रामीण पत्रकारिता का एक आन्दोलन है अमूल्य योगदान दें।

विज्ञापन दर

अंतिम पृष्ठ (रंगीन)	रु 30,000.00
भीतरी पृष्ठ (रंगीन)	रु 25,000.00
भीतरी पृष्ठ (श्वेत श्याम)	रु 10,000.00
भीतरी आधा पृष्ठ (श्वेत श्याम)	रु 05,000.00

A/c Name " GRAM BHARTI " Bank of Baroda, A/c No.: 77140200000560
IFSC Code: BARB0VJHAZR, Branch : Sapru Marg, Hazratganz, Lucknow-226001

स्वतंत्रता आंदोलन में सीतापुर

आलोक कुमार वाजपेयी

अंग्रेजी हुकूमत से भारत को आजाद कराने की जंग में जलियांवाला बाग का नाम सबसे पहले आता है। जहां गोरी फौज ने निहत्थे भारतीयों पर गोलियां बरसाईं थीं। ठीक जलियांवाला बाग की तरह से सीतापुर में भी क्रांति देखने को मिली थी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतवासियों ने अंग्रेजों के घोर अत्याचार सहे और उनके विरुदध संघर्ष किया तथा कुर्बानियां दीं। इसमें उत्तर प्रदेश का सीतापुर जनपद भी अछूता नहीं रहा। यहां के लोग भी आजादी के लिए तन-मन-धन से जुटे हुए थे। भारत की आजादी के संबंध में सामने आए तथ्यों के आधार पर यह कहना बिलकुल न्यायोचित होगा कि सीतापुर जनपद की धरती शुरुआत से ही बलिदानी अमर सपूतों की कोख रही है। 1857 की क्रांति में भी अवध प्रांत को इस जिले से लगभग 2000 सैनिकों के जत्थे की सहायता मिली थी। हालांकि 1858 में लखनऊ पर अंग्रेजों ने पताका फहरा ली, लेकिन सीतापुर जिला अपनी बहादुरी के चलते काफी बाद तक स्वतंत्र रहा। जिले का सारा क्षेत्र अक्टूबर 1858 तक अंग्रेजों के कब्जे से बाहर रहा, जो यहां के सपूतों की बहादुरी का सबसे बड़ा प्रमाण है। खैराबाद के बख्शी राजा हरिप्रसाद के कारण सीतापुर का अंतिम मोर्चा था। हरिप्रसाद की बहादुरी की प्रशंसा शत्रुओं को भी करनी पड़ी। बाद में अंग्रेजों की बड़ी भारी सेना ने इस मोर्चे का घेराव शुरू किया। हरिप्रसाद अकेले पड़ गए थे और अंततः निराशा में डूबकर वे अपनी बीबी के साथ नेपाल चले गए। उनके जाते ही सीतापुर पर अंग्रेजों का पुनः अधिकार हो गया। इसके बाद यहां के नैमिषारण्य में काफी दिनों तक क्रांतिकारियों का समागम होता रहा। इसे वर्तमान में लालबाग के नाम से जाना जाता है। यहां एक सभा आयोजित हुई थी। इस सभा को देखकर बौखलाए अधिकारियों ने पहले लाठीचार्ज करवाया और फिर निवर्तमान डिप्टी कलेक्टर कैलाश चन्द्र त्रिवेदी ने अंधाधुंध गोलियां चलवा दी। जिसमें 300 से 400 के लगभग लोग घायल हो गए। सेनानी

शिवनारायन शर्मा कहते हैं कि कई लोगों की मौत हुई थी, लेकिन शव महज सात लोगों के ही दिखाए गए थे। बाकी शव कहां गए, किसी को आजतक नहीं पता। इनमें कल्लूराम पुत्र टेलूराम, जो मोतीलाल बाग सीतापुर के ही थे, शहीद हो गए। जिले के मधवापुर के बहादुर चंद्रभाल मिश्र, मोतीलाल बाग के उत्तर में पड़ी मड़ैया में रहने वाले वीर बाबू भुर्जी, हाजीपुर निवासी मैकूलाल, कैमहरा का सपूत मुन्नेलाल और आंट मिश्रिख के निवासी मोहर्रम अली आदि शहीद होकर अपना नाम अमर कर गए। गोलीबारी इस कदर हुई कि पूरे पार्क की धरती खून से लाल हो गई। इसी वजह से इस पार्क का नाम मोतीबाग पार्क से बदलकर लालबाग पार्क कर दिया गया। इस पार्क में मौजूद शहीद स्तंभ आज भी उस क्रांति की गवाही दे रहे हैं। सन 1924 में जिले में प्रांतीय राजनीतिक सम्मलेन हुआ। सभा 18 अक्टूबर को मौलाना शौकत अली की अध्यक्षता में मोतीलाल बाग में हुई। उस सभा में मौलाना मुहम्मद अली, पं. मोतीलाल नेहरु, पंडित जवाहरलाल नेहरु, डा सैयद महमूद आदि उपस्थित थे। गांधीजी भी इस सभा में हिस्सा लेने आए थे। गांधीजी ने यहां पर चरखा और खद्दर पर जोर दिए जाने की बात कही। गांधी जी ने लोगों को संबोधित करते हुए खासकर हिन्दुओं से अनुरोध किया कि वे अस्पृश्यता के कलंक को दूर करें। उन्होंने अपने भाषण के दौरान विभिन्न देशहित की बातें लोगों के सामने रखीं। आमतौर पर सीतापुर जनपद आजादी से जुड़े हर आंदोलन में सक्रिय रहा। अंग्रेजी हुकूमत ने सीतापुर के कई सेनानियों को घोर यातनाएं और सजाएं दीं। जनपद के धंधार डाक बांसुड़ा में रहने वाले अयोध्या नाथ को 1930 में 3 मास की कैद की सजा दी गई। वे नमक सत्याग्रह से सक्रियता से जुड़े रहे थे। जिले के ही एक अन्य अयोध्यानाथ नामक स्वतंत्रता प्रेमी को लगान बंदी आंदोलन के दौरान एक मास की कड़ी कैद की सजा सन 1932 में दी गई। ये तंबौर के बेड़लिया गांव के थे। इनके पिता का नाम भगवान था। इसके अतिरिक्त अर्जुन प्रसाद (सिधौली), अली हुसैन (लहरपुर), अवध बिहारी (बिसवां), इलाही बख्श (कमलापुर), कन्हैयालाल (कुंवरपुर), कमला प्रसाद (बढ़ैया, महोली), अंगने लाल (महोली), ओरी लाल (नरनी कठिघरा), गया प्रसाद (नेरी), गिरिजा दयाल (बड़ागांव) और जमुनादीन (चतुरैया) आदि अनेक वीरों के नाम भी प्रमुखता से लिए जाते हैं। सीतापुर के नेरी के मनोहरलाल मिश्र ने सीतापुर के कोषागार पर भारतीय ध्वज शान से फहराकर अंग्रेजी शासन के सामने अपनी वीरता का डंका बजा दिया था। ये इतने देशभक्त थे कि इन्होंने अपने भाई की शराब की दुकान की सारी बोतलें ही तोड़ दीं। मनोहरलाल मिश्र ने कभी पेंशन नहीं ली। उन्होंने कहा कि देशसेवा पुनीत कर्तव्य होता है और उसके लिए पेंशन की कोई जरूरत नहीं होती। उनका कहना था कि वे न तो किसी पेशे से जुड़े थे न ही सरकारी नौकर थे, जो वे इसके हकदार हैं। इस प्रकार के देशभक्त सपूतों की जननी है सीतापुर जिला। जनपद के ब्रह्मावली गांव के सीताराम को सब समझाते-बुझाते कि देखो तुम पर घर-गृहस्थी

> सीतापुर जनपद की धरती शुरुआत से ही बलिदानी अमर सपूतों की कोख रही है। 1857 की क्रांति में भी अवध प्रांत को इस जिले से लगभग 2000 सैनिकों के जत्थे की सहायता मिली थी। हालांकि 1858 में लखनऊ पर अंग्रेजों ने पताका फहरा ली, लेकिन सीतापुर जिला अपनी बहादुरी के चलते काफी बाद तक स्वतंत्र रहा।

का भार है, लड़के, बच्चे और पत्नी भूखों मर रहे हैं। तुमको परिवार की जिम्मेदारी संभालनी चाहिए। इन आंदोलनों के लिए हम सब लोग हैं। इस पर सीताराम त्रिवेदी जवाब देते कि समझ लो मैं मर गया। बाद में उन्हें गिरफतार कर लखनऊ कारागार भेज दिया गया। वहां वे हर रोज भारतमाता की जय बोलते और नतीजन उन्हें कोड़ों से मार-मारकर निर्दयता से लहूलुहान कर दिया जाता। वे अपनी देशभक्ति छोड़ नहीं पाते थे, नतीजन उन्हें घोर यातनाएं दी जाने लगीं। इसी कारण वे बहुत कमजोर हो गए थे। घर आकर वे मात्र 6 माह ही जीवित रह सके। सीतापुर जनपद के ब्रह्मावली गांव की धरती पर यूं तो बहुत से रणबांकुरे हुए हैं जिनमें मुकुट बिहारी त्रिवेदी , सीताराम त्रिवेदी स्वतंत्त्रा संग्राम सेनानी और हनुमान प्रसाद अवस्थी स्वतंत्त्रा संग्राम सेनानीा आदि प्रमुख हैं। इन महान विभूतियों में हनुमान प्रसाद अवस्थी, जो कि लगभग 104 वर्ष के आसपास के होंगे, आज भी हमारे बीच मौजूद हैं। इनकी आवाज अब बिलकुल भी स्पष्ट नहीं है, फिर भी जैसे-तैसे हमने उन्हें समझने का प्रयास करते हुए बात की। उन्होंने बताया कि उस समय अंग्रेजों ने न जाने कितने साथियों को जेल, फांसी और कालापानी की सजा दे दी थी। परतंत्र देश में भय का माहौल था। जेलों में नवीनतम ढंग के यातनाओं के साधन मौजूद थे। हनुमान प्रसाद अवस्थी पर भी सरकार के खिलाफ बगावत का अपराध घोषित हुआ था। उन्होंने जगह-जगह लोगों में देशप्रेम और सरकार के खिलाफ बगावत का आहवान किया, नतीजतन 9 फरवरी 1941 को वे गिरफतार कर जेल भेज दिए गए। इन्हें चुनार जेल में 1 साल की सजा काटनी पड़ी और 30 रुपए अर्थदंड भरना पड़ा। आज भी सीतापुर की धरती पर पाकिस्तान से लड़े त्रिभुवननाथ त्रिवेदी (ब्रह्मावली), संयुक्त राष्ट्र संघ को सेवाएं देने वाले और कारगिल युदध के समय से कार्यरत जांबाज हवलदार गोपाल कांत (ब्रह्मावली) वीरता की परिपाटी जीवित रखते हुए लगातार जिले का नाम रोशन कर रहे हैं।

सीतापुर जनपद के ब्रह्मावली गांव की धरती पर यूं तो बहुत से रणबांकुरे हुए हैं जिनमें मुकुट बिहारी त्रिवेदी , सीताराम त्रिवेदी (स्वतंत्त्रा संग्राम सेनानी) और हनुमान प्रसाद अवस्थी (स्वतंत्त्रता संग्राम सेनानी) आदि प्रमुख हैं।

देश के लिए पराक्रम के साथ शहादत में भी यह जनपद किसी से आज भी पीछे नहीं है। वर्ष 1999 में कारगिल युदध में शहीद भारतमाता के सपूत कैप्टन मनोज पांडेय ने भी सीतापुर को गौरवान्वित किया। इनके शौर्य और पराक्रम के बलबूते आने वाली पीढ़ी देश पर आस्था के साथ बलिदान होने की गाथा को युगों-युगों तक दोहराती नजर आती रहेगी, चूँकि यह धरती महान बलिदानी महर्षि दधीच की अस्थिदान स्थली है।

साक्षात्कार

आरक्षण मिले तो पार लगाएंगे भाजपा की नैया

डा. संजय निषाद

राष्ट्रीय अध्यक्ष

निषाद एकता परिषद्

सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े निषाद समाज को एकजुट कर उन्हें सत्ता में भागीदारी के लिए जागृत करने वाले निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डाक्टर संजय निषाद का मानना है कि पिछले 70 सालों में सत्ता की मलाई खाने वाली पार्टियों ने निषाद समाज को महज वोट बैंक ही समझा। देश में 18 फीसद की जनसंख्या वाले इस समाज का वोट लेकर विभिन्न राजनीतिक दलों ने निषादों को केवल छलने का ही कार्य किया। लेकिन अब निषाद समाज जागृत हो चुका है और अपने हक के लिए आवाज बुलंद कर रहा है। उत्तर प्रदेश में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव में यदि भारतीय जनता पार्टी ने अपने दिए गए आश्वासन के अनुरूप निषाद समाज को अनुसूचित जाति का आरक्षण दे दिया तो यह समाज चुनाव में उसकी नैया पार लगाने को तैयार है। **ग्राम भारती और उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के संवाददाता दुर्गेश चन्द्र ओझा** से विशेष बातचीत में **डा संजय ने निषाद** समाज के प्रतिनिधि के रूप में खुलकर अपनी भावी रणनीतियों को साझा किया।

डाक्टर संजय निषाद का मानना है कि कांग्रेस,

समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने निषादों से एकमुश्त वोट लेकर केवल अपनी जाति को संरक्षण देने का कार्य किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े होने के बावजूद यह समाज अपने मूल हक आरक्षण से वंचित रहा। डाक्टर निषाद का कहना है कि निषाद समाज अब जाग चुका है और वह अब सत्ता के शीर्ष पर उसी को बैठायेगा जो उन्हें आरक्षण देने का कार्य करेगा।

निषाद पार्टी ने भारतीय जनता पार्टी को इसी शर्त पर समर्थन दिया था कि सत्ता में भागीदारी के साथ ही भाजपा निषादों को उनकी पुरानी मांग के अनुरूप अनुसूचित जाति का आरक्षण प्रदान करेगी। अगर मौजूदा सरकार हमारे आरक्षण के मुद्दे पर जल्द ही किसी निर्णय पर नहीं पहुंचती हैं तो 18 प्रतिशत की आबादी वाले मछुआ समाज को क्षण भर का भी समय नहीं लगेगा अपने निर्णय को पलटने और सरकार को सत्ता

से बेदखल करने में। साथ ही 2022 के आगामी विधानसभा चुनाव में निषाद बाहुल्य 160 सीटों पर मछुआ समाज निषाद पार्टी के हाथ मजबूत करके अपने लिखे हुए अधिकार को लागू करने की क्षमता रखता है।

डा संजय ने बताया कि 2013 में जब राष्ट्रीय निषाद एकता परिषद का स्थापना किया गया तो इसका एकमात्र लक्ष्य अपने समाज को शिक्षित करना तथा उन्हें अपने हक के लड़ाई के लिए जागरूक करना था, 2013 से लेकर 2016 तक प्रदेश के सभी जिलों में भ्रमण करने के बाद राष्ट्रीय निषाद एकता परिषद को यह समझ आ गया था कि समाज में केवल निषाद ही वंचित और शोषित नही है बल्कि दूसरे समाज के लोग भी इसमें शामिल है तब वह और उनके संगठन के कोर कमेटी ने फैसला लिया कि जब तक हमारी भागीदारी सरकार में और राजनीति में नहीं होगी तब तक हमें हमारा हक कोई पार्टी देने वाली नहीं है। इसका सीधा सा एक उदाहरण यह है कि जब 1857 में हमारे पूर्वजों ने सती चौरा कांड में सैकड़ों अंग्रेजो को पानी में डुबाकर उनको मौत के घाट उतार दिया था।

इसके ईनाम में निषादों के वंशजों को क्रिमिनल घोषित कर दिया। देश के आजादी के बाद भी निषादों की आवाज उठाने वाला कोई नहीं था। एक लंबे इंतजार के बाद 16 अगस्त 2016 में एक ग्रामीण परिवेश से निकल कर उन्होंने निर्बल इंडियन शोषित हमारा आम दल का गठन कर पूरे प्रदेश में यह संदेश दिया कि अब निषादों के भागीदारी बिना सरकार बनाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। जीत की होड़ में तो सब लगे है। मगर संघर्ष भरी दौड़ में कोई हिस्सा नहीं लेना चाहता।

डाक्टर संजय निषाद के संघर्षों की कहानी

- 13 जनवरी 2013 को 23 लोगों के साथ श्रृंगवेरपुरधाम पर पहुंच कर राजवंश का एहसास कराना।
- 01 फरवरी 2014 से 14 फरवरी 2014 तक गोरखपुर में जिलाधिकारी के कार्यालय पर क्रमिक अनशन।
- 17 फरवरी 2014 को पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के आवास का राजधानी लखनऊ में घेराव।
- 07 जून 2015 को रेल रोको आंदोलन (कसरवल कांड़) सरकार के तांडव में शहीद अखिलेश निषाद समेत 37 लोगों सहित डा संजय कुमार निषाद को धारा 302 में अपराधी घोषित करना।
- 07 जून 2016 में गोरखपुर धर्मशाला में रेल रोको आंदोलन करना।
- 15 सितंबर 2016 को राजधानी लखनऊ के सबसे बड़े मैदान रमाबाई अंबेडकर मैदान को 10 लाख लोगों की भीड़ को एकजुट करना।
- 29 मार्च 2017 को देश की राजधानी दिल्ली के जंतर-मंतर पर घेराव और धरना प्रदर्शन करना।
- 07 जून 2017 को गोरखपुर कौवाबाग रेल रोको आंदोलन करना।
- 07 जून 2018 में गोरखपुर नंदानगर में रेल रोको आंदोलन करना।
- 28 दिसंबर 2018 को वीआईपी काफिले का कठवा मोड़ गाजीपुर जनपद में घेराव करना।
- 09 मार्च 2019 को मछुवा आरक्षण हुंकार जन आक्रोश यात्रा का स्वागत समारोह रैली के दौरान गोरखपुर मठ का घेराव करना।

ब्लाक को देश में नंबर वन बनाना है लक्ष्य

- बीते ढाम्र साल के कार्यकाल में हासिल किया था सूबे में चौथा स्थान
- हर ग्राम पंचायत को मक्कडल बनाने का खहृचा जा रहा है खाका

राहुल कुमार सिंह

मनीष कुमार सिंह
ब्लाक प्रमुख, मुरादाबाद सदर

मुरादाबाद। सदर ब्लाक प्रमुख मनीष कुमार लसह ने बताया कि इस बार ब्लाक को देश का नंबर बनाने का लक्ष्य तय किया है। इसके लिए हर ग्राम पंचायत को माडल ग्राम पंचायत बनाने के लिये विकास का खाका तैयार कराया जा रहा है। बता दें कि मनीष कुमार सिंह हाल ही में हुए त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में मुरादाबाद सदर ब्लाक से दूसरी बार निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। उन्होंने बताया कि पिछला कार्यकाल महज ढाई साल का था। इस दौरान विकास की योजना अधूरी ही रह गई। इस बार फिर मौका मिला है, लिहाजा अबकी बार हर ग्राम पंचायत का निरीक्षण किया जा रहा है। निरीक्षण में ग्रामीणों व ग्राम पंचायत का पूरा सहयोग लिया जाएगा।

ब्लाक प्रमुख मनीष कुमार सिंह ने बताया कि उनका प्रयास है कि इस बार ग्राम पंचायतें व क्षेत्र पंचायत आपसी सहयोग से गांवों का चहुमुखी विकास करने में सफल रहें। प्राथमिकता के आधार पर ऐसे गांव चयनित किए जा रहे हैं। जहां सबसे कम कार्य हुए हैं। सड़क, नालियों के अलावा गावों के सौंदर्यकरण पर भी फोकस किया जा रहा है। इसके साथ ही केंद्र व प्रदेश सरकार की सभी योजनाओं का लाभ पात्र ग्रामीणों को दिलाने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि ग्रामीणों को सभी सुविधाओं को मुहैया कराने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। ब्लाक क्षेत्र में किसान सम्मान निधि, पेंशन, सामूहिक विवाह, आदि योजनाओ के अलावा पंचायतों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए सामुदायिक भवन, पेयजल व्यवस्था, जल निकासी और कूड़ा निस्तारण पर भी काम शुरू किया जाएगा।

इस बार ग्राम पंचायतें व क्षेत्र पंचायत आपसी सहयोग से गांवों का चहुमुखी विकास करने में सफल रहें। प्राथमिकता के आधार पर ऐसे गांव चयनित किए जा रहे हैं। जहां सबसे कम कार्य हुए हैं।

शाहजहांपुर में ब्लाक प्रमुख की सभी सीटों पर भाजपा के प्रत्याशी जीते

संजीव कुमार गुप्ता

शाहजहांपुर जनपद में ब्लाक प्रमुख की सभी 15 सीटें जीतकर भारतीय जनता पार्टी ने परचम लहराया है। जनपद के पांच ब्लाकों में चुनाव हुआ, जिसमें सभी सीटों पर भाजपा ने जबरदस्त जीत हासिल की है। लसधौली, भावलखेड़ा, तिलहर, बंडा और जैतीपुर में ब्लाक प्रमुख के चुनाव हुए थे। इनमें भाजपा प्रत्याशियों की भारी बहुमत से जीत हुई है।

बता दें कि जनपद में 15 ब्लाक हैं। दस ब्लाक प्रमुख पहले ही निर्विरोध चुन लिए गए थे। जनपद के 15 ब्लाकों में मदनापुर से महेश पाल सिंह, ददरौल से मुनेश्वर दयाल, कांट से श्रीदत्त शुक्ला, जलालाबाद से लता सिंह, मिर्जापुर से प्रियांशु रघुवंशी, कलान से रुचि

वर्मा, खुटार से नामित कुमार, पुवायां से नीलम देवी, कटरा - खुदागंज से अर्चना और निगोही से सचिन कुमार पहले ही निर्विरोध ब्लाक प्रमुख चुने जा चुके थे। पांच ब्लाकों में चुनाव हुआ। इनमें ब्लाक भावलखेड़ा से राजाराम, बंडा से ओम प्रकाश, लसधौली से मछला सिंह, जैतिपुर से सपना कश्यप और तिलहर से कविता यादव ने भारी बहुमत से जीत हासिल की है। इस तरह जनपद के सभी 15 ब्लाकों में भाजपा के प्रत्याशियों ने सभी जगह से जीत हासिल की है।

इस दौरान कैबिनेट मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने विपक्षियों के सत्ता के दुरुपयोग करने के सवाल पर कहा कि इस चुनाव में किसी भी तरह का सत्ता का दुरुपयोग नहीं

किया गया। पूरी निष्पक्षता के साथ चुनाव हुआ है। भारतीय जनता पार्टी का लोगों में जनाधार बढ़ा है। जिससे प्रेरित होकर लोग बीजेपी में शामिल हो रहे हैं। समाजवादी पार्टी पर सवाल खड़ा करते हुए उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी एवं अन्य पार्टियों का जनाधार घट चुका है इसलिए समाजवादी पार्टी अनर्गल बयानबाजी कर रही है।

मदनापुर से महेश पाल सिंह, ददरौल से मुनेश्वर दयाल, कांट से श्रीदत्त शुक्ला, जलालाबाद से लता सिंह, मिर्जापुर से प्रियांशु रघुवंशी, कलान से रुचि वर्मा, खुटार से नामित कुमार, पुवायां से नीलम देवी, कटरा - खुदागंज से अर्चना और निगोही से सचिन कुमार पहले ही निर्विरोध ब्लाक प्रमुख चुने जा चुके थे।

शाहजहांपुर जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव ने शपथ ली

संजीव कुमार गुप्ता

शाहजहांपुर। कैबिनेट मंत्री सुरेश कुमार खन्ना की मौजूदगी में जिला पंचायत की नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती ममता यादव सहित जिला पंचायत सदस्यों ने गांधी हाल प्रेक्षागृह में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती ममता यादव को जिला अधिकारी इंद्र विक्रम सिंह ने शपथ दिलाई। इसके बाद जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती ममता यादव ने सभी नवनिर्वाचित जिला पंचायत सदस्यों को शपथ दिलाइ और अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया। इस मौके पर चन्द्रभानु सिंह एवं अनुराधा यादव (बहन-बहनोई) ने जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव को चांदी का मुकुट भेंट कर सम्मानित किया और इसी क्रम में आक्सीजन सप्लायर प्रेम नारंग ने कैबिनेट मंत्री सुरेश कुमार खन्ना एवं नवनिर्वाचित जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती ममता यादव को चांदी का मुकुट भेंट कर सम्मानित किया।

इसके उपरान्त विकास भवन सभागार में जिला पंचायत अध्यक्ष की अध्यक्षता में सदन की पहली बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में कैबिनेट मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने नवनिर्वाचित जिला पंचायत अध्यक्ष और सदस्यों से कहा कि जिला पंचायत अध्यक्ष एवं जिला पंचायत सदस्य जनता से मधुर व्यवहार बनाकर रखें। जनप्रतिनिधि जिस शिकायतकर्ता की शिकायत निस्तारित करें। उसको फोन अथवा डाक के माध्यम से अवगत करा दें कि आप द्वारा की गयी शिकायत का निस्तारण करा दिया गया है। कार्यक्रम में सांसद अरुण कुमार सागर, भाजपा जिलाध्यक्ष हरीप्रकाश वर्मा, महानगर अध्यक्ष अरुण कुमार गुप्ता, विधायक रोशनलाल वर्मा, विधायक चेतराम, विधायक मानवेंद्र सिंह, क्षेत्रीय महामंत्री ब्रज क्षेत्र राकेश मिश्रा अनावा,

जिला सहकारी बैंक चेयरमैन डीपीएस राठौर, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अजय प्रताप सिंह यादव, वीरेंद्र यादव, दर्जा राज्यमंत्री सुरेंद्र बाल्मीकि सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

प्रदेश का सर्वोत्तम ब्लाक बनेगा बिलरियागंज

श्रीमती उर्मिला रमेश यादव

ब्लाक प्रमुख,बिलरियागंज
आजमगढ़

आजमगढ़ जनपद के विकास खण्ड बिलरियागंज में प्रमुख के पद पर श्रीमती उर्मिला रमेश यादव विजयी हुई हैं। नवनिर्वाचित ब्लाक प्रमुख बिलरियागंज श्रीमती यादव से उत्तर प्रदेश समाचार सेवा और ग्राम भारती के संवाददाता एस. पी. तिवारी ने विशेष बातचीत की। प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश:

प्रश्न: आप बिलरियागंज ब्लाक की प्रमुख चुनी गई हैं, सबसे पहले मैं आपको बधाई देता हूं। आप अपने ब्लाक की जनता को क्या संदेश देना चाहती हैं ?

उत्तर: सबसे पहले मैं अपने ब्लाक के लोगों का आभार व्यक्त करती हूं। ब्लाक के समस्त सदस्यों को धन्यवाद देती हू जिन्होंने अपना विश्वास मुझ पर व्यक्त किया।

प्रश्न: कोविड-19 से जनता काफी परेशान रही। तीसरी लहर की बात कही जा रही है। ऐसे में ब्लाक की जनता को किस तरह से सुरक्षित करेंगी?

उत्तर: हमारे ब्लाक में 116 ग्राम पंचायतें तथा 126 बीडीसी सदस्य हैं। हम सब मिलकर इस आपदा से लड़ेंगे, पहले कोविड के समय में मेरे पति श्री रमेश चंद्र यादव जी ब्लाक प्रमुख थे, जिन्होंने जगह-जगह सैनिटाइजेशन साफ साफाई और मास्क वितरण का कार्य किया उसी तरह से आगे चलता रहेगा।

प्रश्न: मजदूरों के लिए क्या योजना बनाई हैं ?

उत्तर: हमारे ब्लाक के जितने भी मजदूर हैं, सबके लिए मनरेगा के तहत काम दिया जाएगा ।

प्रश्न: ब्लाक में खड़ंजा नाली की क्या व्यवस्था है ?

साक्षात्कार/पंचायत प्रतिनिधि

उत्तर: मैंने अपनी सभी ग्राम पंचायतों के समग्र विकास के लिए कार्य योजना तैयार कर ली है। सबका जीवन सुलभ हो। यह मेरी प्राथमिकता होगी।

प्रश्न: जल निकासी एवं पुलिया निर्माण के लिए आपने क्या योजना बनायी है ?

उत्तर: जो गांव किसी कारणवश विकास से दूर हैं, जलभराव रहता है। आवागमन का मार्ग बाधित रहता है। हम ऐसे स्थानों को चिन्हित कर रहे हैं, और वहां पर पुलिया, खड़ंजा एवं नाली का निर्माण कराया जाएगा।

प्रश्न: आपने अपने ब्लाक में प्रकाश के लिए क्या व्यवस्था सोची है ?

उत्तर: समस्त ग्राम पंचायत तक प्रकाश की समुचित व्यवस्था कराने की हमारी कार्य योजना है। समस्त बीडीसी का सहयोग मिलेगा, मिलकर ब्लाक को प्रदेश का सबसे उत्तम बनाने की कोशिश करेंगी।

प्रश्न: समाज सेवा का भाव कैसे और कहां से आया, आप किसे अपना आदर्श मानती हैं ?

उत्तर: मेरे पति श्री रमेश चंद यादव जी एक प्रमुख समाजसेवी हैं, हमेशा समाज सेवा के कार्य में लगे रहते हैं। उनको देखकर मेरे मन में भी समाज के लिए सेवा भाव जगा।

मैं पूरी लगन से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करूंगी, और अपने ब्लाक को एक आदर्श ब्लाक बनाऊंगी।

आजादी के 'अमृत महोत्सव' और चौरीचौरा क्रांति के 'शताब्दी महोत्सव' के बीच हम और आप

शक्ति प्रकाश श्रीवास्तव

(लेखक राज्य मुख्यालय पर मान्यता प्राप्त वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार सहित उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के संपादक-पूर्वी उत्तर प्रदेश हैं)

सच मानिए कि हम भारत देश के नागरिक इस बात के लिए सौभाग्यशाली हैं कि आज जहां हम देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर मनाए जाने वाले आजादी का अमृत महोत्सव के साक्षी बनने जा रहे है वहीं आजादी के इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम चौरीचौरा कांड की 100 वीं वर्षगांठ पर आयोजित होने वाले देशव्यापी शताब्दी समारोहों में शामिल होने के हकदार बने रहे हैं। देश का कौन ऐसा नागरिक है जो आज यह नहीं जानता कि आजादी के मौजूदा स्वरुप तक पहुंचाने में हमारे पूर्वजों को क्या-क्या मंजर देखने पड़े थे, कौन-कौन सी यातनाएं झेलनी पड़ी थीं, कितनों को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी थी। इस सिलसिले में हम महात्मा गांधी, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, अशफाकुल्लाह खान, रामप्रसाद बिस्मिल, सुभाष चंद्र बोस, लाला लाजपत राय, विपिन चंद्र पाल, जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, रानी लक्ष्मी बाई, बेगम हजरत महल, बाल गंगाधर तिलक, चितरंजन दास, सरदार बल्लभ भाई पटेल, विनायक दामोदर सावरकर, कुँवर सिंह, मंगल पाण्डे, दादा भाई नौरोजी, के एम मुंशी, सी राजगोपालाचारी जैसे चंद सैकड़ों नाम ही जानते हैं जबकि सच्चाई ये है कि इनसे इतर लाखों की संख्या और भी हैं जिन्हें हम जानते भी नहीं है। लेकिन इस बात के लिए देशवासियों को राजनीति, जाति-धर्म से ऊपर उठते हुए सत्तारूढ़ सरकार को धन्यवाद देना चाहिए जो उसने न केवल परंपरागत वार्षिक आयोजन को विविधता दी बल्कि ऐसे गुमनाम शहीदों को ढूँढने और उन्हे रिकार्ड के तौर पर देश के सामने लाने का प्रयास शुरू किया। इस बात पर भी चर्चा शुरू हुई कि आजादी के इतिहास मे क्या कुछ गलत दर्ज है उसको दस्तावेजी प्रमाण के साथ देश के सामने लाया जाए। देश आज स्वतन्त्रता की न केवल 74वीं वर्षगांठ माना रहा है बल्कि ऐतिहासिक महत्वपूर्ण 75वें वर्ष में प्रवेश भी कर रहा है। सरकार ने इस महत्वपूर्ण वर्ष भर पूरे देश में 'आजादी का अमृत महोत्सव' समारोह पूर्वक मनाने का निर्णय लिया है। साथ ही साथ स्वतन्त्रता आंदोलन के इतिहास में टर्निंग प्वाइंट के रूप

भले ही स्वतन्त्रता आंदोलन की शुरुआत 1857 में मेरठ की क्रांति से हुई थी जिसके बाद 90 वर्ष लग गए थे देश को पूर्ण आजाद होने में। लेकिन यह भी यथार्थ है कि स्वतन्त्रता आंदोलन सरीखे हवन में आजादी प्राप्ति के लिए अंतिम आहुति देने का कार्य चौरी-चौरा की घटना ने ही किया। यह घटना आंदोलन की वह अभूतपूर्व घटना साबित हुई जिसने आजादी के समूचे परिदृश्य को बदल दिया।

में दर्ज चौरीचौरा कांड के भी 100 वें वर्ष में पदार्पण अवसर पर चौरीचौरा कांड को 'चौरीचौरा क्रान्ति' मानते हुए शताब्दी वर्ष का आयोजन समूचे देश में आयोजित कर रही है। इतने वर्षों से चौरीचौरा कांड के रूप में जिस घटनाक्रम को पूरा देश जानता था उसे सरकार ने 'कांड' जैसे नकारात्मक शब्द की जगह 'क्रांति' शब्द का प्रयोग शुरु किया। इससे लगता है कि वाकई जिस पर आज तक किसी का ध्यान नहीं था उस पर अब सरकार का फोकस है।

अहम है 'चौरीचौरा'

भले ही स्वतन्त्रता आंदोलन की शुरुआत 1857 में मेरठ की क्रांति से हुई थी जिसके बाद 90 वर्ष लग गए थे देश को पूर्ण आजाद होने में। लेकिन यह भी यथार्थ है कि स्वतन्त्रता आंदोलन सरीखे हवन में आजादी प्राप्ति के लिए अंतिम आहुति देने का कार्य चौरीचौरा की घटना ने ही किया। यह घटना आंदोलन की वह अभूतपूर्व घटना साबित हुई जिसने आजादी के समूचे परिदृश्य को बदल दिया। महात्मा गांधी ने इस घटना पर अफसोस जताते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि अभी हम लड़ाई के लिए परिपक्व नहीं है। यह कहते हुए उन्होने अन्य सहयोगियों की राय को दरकिनार करते हुए असहयोग आंदोलन वापसी का निर्णय ले लिया। स्वतन्त्रता आंदोलन के समूचे पृष्ठभूमि का यदि बारीकी से अध्ययन किया जाये तो मिलेगा कि समूचे आंदोलन के पार्श्व में परोक्ष-अपरोक्ष तौर पर किसानो की सहभागिता रही है। चौरीचौरा की घटना में भी किसानो ने ही स्वतन्त्रता के लिए क्रांति का मार्ग अपनाया। यह महज दुर्भाग्य ही माना जाएगा कि इस महत्वपूर्ण घटनाक्रम को इतिहास में जो स्थान मिलना चाहिए वो नहीं मिल सका। इसके तत्कालीन राजनीतिक कारण जो भी रहे हों। इस महत्वपूर्ण क्रांति को चौरीचौरा कांड नाम दिया गया, जो उसके महत्व को देखते हुए कत्तई न्यायसंगत नहीं है।

आजादी की लड़ाई में ब्रिटिश सत्ता को नेस्तनाबूद करने वाली इस इकलौती क्रांति को इतिहास में उसका वाजिब स्थान क्यों नहीं दिया गया, इसका जवाब किसी के पास आज नही है। लेकिन अब वह समय आ गया है कि ऐसी क्रांतियों के महत्व को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर लाया जाये। सिर्फ चौरीचौरा ही नहीं ऐसे तमाम घटनाक्रमों और शामिल रहे गुमनाम शहीदों का पता लगाया जाये और उनको देश से रूबरु कराया जाए।

क्या हुआ था इस 'क्रांति' में

बात सन 1922 की है। पूरे देश में आजादी के लिए अँग्रेजी हुकूमत के खिलाफ महात्मा गांधी द्वारा चलाया जा रहा अहिंसा आंदोलन अपने चरम पर था। तारीख उस दिन 4 फरवरी थी, गांधी जी के इस आंदोलन में सहभागी इलाकाई सत्याग्रही चौरी चौरा के मुंडेरा बाजार से जुलूस निकाल रहे थे। इसी दौरान पुलिस लाठी चार्ज हुआ और इससे आक्रोशित सत्याग्रहियों ने चौरी चौरा थाना परिसर पहुँच कर थाना भवन को आग के हवाले कर दिया। जिसमें 22 पुलिसकर्मी जलकर मर गए और 3 सत्याग्रहियों की भी पुलिस की गोली लगने से मौत हो गयी। इसके बाद सैकड़ों की संख्या में सत्याग्रहियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। मदन मोहन मालवीय सरीखे वकीलों की पैरवी के बावजूद 19 सत्याग्रहियों को चौरी चौरा मामले में फांसी दी गयी। इतिहास के पन्नों में इस घटना को चौरी चौरा कांड के नाम से दर्ज किया गया। इस हिंसक कृत्य की खबर मिलते ही गांधीजी इतने आहत हुए कि 12 फरवरी 1922 को बारदोली में आयोजित कांग्रेस की बैठक में असहयोग आन्दोलन वापसी का ऐलान कर दिया। आंदोलन भले वापस हो गया लेकिन इस घटना ने ब्रिटिश सरकार की चूलें हिलाने का महत्वपूर्ण काम किया। आंदोलन के बारे में अमरीकी लेखक लुई फिशर ने लिखा कि यह आंदोलन शांति की दृष्टि से नकारात्मक लेकिन प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक साबित हुआ है।

असली-नकली शहीद की गुत्थी

कितना दुर्भाग्य है कि देश के इतिहास में एक ऐसी घटना घटी जिसमें मरने वाला और मारने वाला दोनों को ही शहीद का दर्जा हासिल है। जी हाँ चौंकिए नहीं गांधी के अहिंसा आंदोलन के स्थगन का कारण साबित हुए चौरी चौरा की घटना से ही इसका भी संबंध है। जब सत्याग्रहियों द्वारा चौरी चौरा थाना जलाया गया तो उसमें छिपे 22 पुलिसकर्मियों की जलने से मौत हो गयी थी। सन 1924 में अंग्रेज़ अधिकारी विलियम मौरिस ने थाना परिसर में ही पूरब

की तरफ मारे गए पुलिसकर्मियों की याद में एक शहीद स्मारक बनवा दिया। दबी जुबान चर्चा होने लगी कि निहत्थे हिंदुस्तानियों को गोली का शिकार बनाने वाले पुलिसकर्मी शहीद कैसे हो सकते हैं। आजादी के लगभग छः दशक तक किसी ने इस पर आवाज बुलंद नहीं की जब बाबा राघवदास ने यह ऐलान किया कि मैं ऐसे शहीद स्मारक की दीवार गिराऊंगा तब राजनेताओं का ध्यान इस ओर गया और सन 1993 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पी वी नरसिंहराव ने यहाँ अँग्रेजी हुकूमत में शहीद हुए देशवासियों की याद में बने शहीद स्मारक का लोकार्पण किया। तब से यहाँ शहीदों की याद में कार्यक्रम किया जाने लगा। पुलिस थाना परिसर में बने शहीद स्मारक पर भी पुलिस वाले श्रदधा सुमन अर्पित करते हैं। अब देखना ये कि इस पर कब प्रशासन का ध्यान जाता है और यहाँ पहुँचने वाले आम देशवासियों को 'असली शहीद कौन' की गुत्थी कब और किसके द्वारा सुलझाया जाता है।

सरकार के प्रयास से उम्मीद

भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के इतिहास की महत्वपूर्ण चौरी चौरा क्रान्ति की ऐतिहासिक तारीख 4 फरवरी और देशवासियों को गुलामी की जंजीरों से मुक्ति दिलाने वाले अहम तारीख 15 अगस्त को लेकर खासकर चौरी चौरा क्रांति की 100वीं और आजादी की 75 वीं वर्ष को जिस तरह से राज्य और केंद्र की सरकारों ने प्राथमिकता में शामिल किया है। उससे एक उम्मीद जग रही है कि स्वतन्त्रता आंदोलन की इतिहास में जो गड़बड़ियाँ हुई हैं या जो किसी न किसी आग्रह की वजह से आम देशवासियों तक नहीं पहुँच सकी है। अब पहुँच सकेंगी और आमजन अपने अतीत की सच्चाई जान सकेगा। ऐसा भरोसा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस सम्बोधन के बाद और बढ़ गया जिसे 4 फरवरी 2021 को चौरी चौरा (गोरखपुर) में चौरी चौरा कांड 'अब कांड नही क्रान्ति' के 100 वें वर्ष में प्रवेश पर आयोजित चौरी चौरा शताब्दी महोत्सव को वर्चुअली संबोधित करते हुए कही थी। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि चौरी चौरा में जो कुछ हुआ वो सिर्फ एक थाने में आग लगाने की घटना नहीं थी, इससे एक बड़ा संदेश अंग्रेजी हुकूमत को दिया गया। उन्होंने कहा कि इस साल देश की आजादी के 75 साल के वर्ष की भी शुरुआत होगी। पीएम मोदी ने कहा कि इस घटना को इतिहास में सही जगह नहीं दी गई। पीएम मोदी ने कहा कि देश को कभी चौरी चौरा की घटना नहीं भूलनी चाहिए और उन्हें भी जिन्होने देश के लिए अपनी जान दी है। उन्होने इस मौके पर एक विशेष डाक टिकट भी जारी किया और कहा कि इस क्रांति के 4 फ़रवरी, 2022 को 100 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं और ऐसे में यह प्रासंगिक हो जाता है कि इसके इतिहास के बारे में आम जनसामान्य एवं खासकर युवा पीढ़ी को बताया जाए। प्रदेश की योगी सरकार ने इस क्रांति को पाठयक्रम में शामिल करने का निर्णय लिया है।

चौरी चौरा क्रान्ति की ऐतिहासिक तारीख 4 फरवरी और देशवासियों को गुलामी की जंजीरों से मुक्ति दिलाने वाले अहम तारीख 15अगस्त को लेकर खासकर चौरी चौरा क्रांति की 100वीं और आजादी की 75 वीं वर्ष को जिस तरह से राज्य और केंद्र की सरकारों ने प्राथमिकता में शामिल किया है। उससे एक उम्मीद जग रही है कि स्वतन्त्रता आंदोलन की इतिहास में जो गड़बड़ियाँ हुई हैं या जो किसी न किसी आग्रह की वजह से आम देशवासियों तक नहीं पहुँच सकी है। अब पहुँच सकेंगी और आमजन अपने अतीत की सच्चाई जान सकेगा।

शब्दों की आहुति से प्रज्ज्वलित रहा भारतीय स्वतंत्रता का महायज्ञ

ओम प्रकाश तिवारी

कलम आदि काल से ही देश-समाज का मार्गदर्शन करती आयी है। जब समाज दिग्भ्रमित होता है, राजनीति पथभ्रष्ट होती है, और आम आदमी किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है तो कलम देश-समाज और राजनीति का मार्गदर्शन करती है। भारत का स्वतंत्रता संघर्ष भी कलम के जरिये ही फलीभूत हुआ। कलम ने ही जन-गण-मन को उद्वेलित किया। 1857 से लेकर 1947 तक लेखकों, कवियों और पत्रकारों की कलम से निकले शब्द आजादी के आंदोलन में ईंधन का काम कर रहे थे। हालांकि इस सत्य को उद्घाटित करने में इतिहासकारों का संकोच विस्मित करने वाला है।

पराधीनता सामाजिक और राजनीतिक पराभव को जन्म देती है। पराधीन भारत की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति भी ऐसी ही थी। कहीं से कोई आशा की किरण नहीं दिख रही थी। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में साहित्यकारों ने देश-समाज के मार्गदर्शन का संकल्प लिया और अपनी पवित्र लेखनी के माध्यम से समाज का मनोबल और आत्मबल को जागृत किया। देशवासियों को स्वतंत्रता हासिल करने के लिए उद्वेलित किया। साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संघर्ष के महायज्ञ में तत्कालीन समाज में चेतना के बीज बोये। चेतना के इन्हीं अंकुरों की सुवास से सुवासित वृक्षों ने उस झंझावात को जन्म दिया, जिसने छात्रों, नौजवानों, किसानों समेत समाज के हर तबके को आजादी के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देने के लिए प्रेरित किया।

पराधीन भारत की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति भी ऐसी ही थी। कहीं से कोई आशा की किरण नहीं दिख रही थी। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में साहित्यकारों ने देश-समाज के मार्गदर्शन का संकल्प लिया और अपनी पवित्र लेखनी के माध्यम से समाज का मनोबल और आत्मबल को जागृत किया। देशवासियों को स्वतंत्रता हासिल करने के लिए उद्वेलित किया।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पूरे भारत वर्ष में हर भाषा हर बोली के कवियों, लेखकों और पत्रकारों ने अपने - अपने ढंग से अपने- अपने क्षेत्र के लोगों का आजादी के आंदोलन में कूदने का आवाहन किया। स्वतंत्रता आंदोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम अग्रणी है। भारतेंदु जी की कलम से निकली रचनाओं को पढ़कर लाखों छात्र और नौजवान ब्रिटिश हुकूमत के अन्याय और अत्याचार के खिलाफ मर मिटने को तैयार हो उठे।

'भारत दुर्दशा' में वह लिखते हैं, **'रोबहु सब मिलि, अबहु भारत भाई, हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी**

जाई।' इसी तरह 'अंधेर नगरी' के माध्यम से भारतेन्दु जी ने तत्कालीन राजाओं की कार्यशैली पर करारा चोट किया था। उन्होंने जनता को बताया कि हमारे वर्तमान शासक घोर स्वार्थी हैं। उन्हें जनता के दुख-दर्द से सरोकार नहीं है। ऐसे स्वार्थी शासकों के खिलाफ आंदोलन करना देशवासियों का धर्म है।

इसी तरह प्रताप नारायण मिश्र, मुंशी प्रेमचंद,

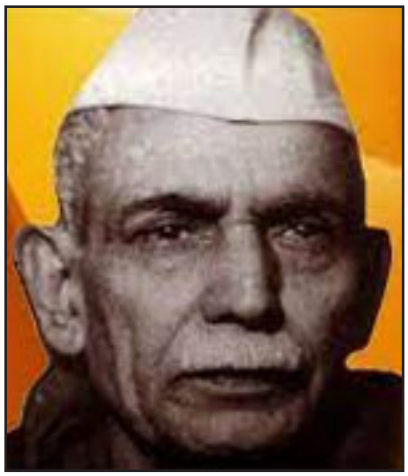

बद्रीनारायण चौधरी, जयशंकर प्रसाद, राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगमोहन सिंह, पं.अम्बिका दत्त व्यास, बाबू रामकृष्ण वर्मा, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और माखनलाल चतुर्वेदी समेत अनेक साहित्यकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन की धधकती हुई ज्वाला को शब्दों की आहूति से प्रचंड किया। मुंशी प्रेमचंद के 'रंगभूमि' और 'कर्मभूमि' उपन्यास और जयशंकर प्रसाद के 'चन्द्रगुप्त तथा स्कन्दगुप्त' नाटक ने क्रान्ति की ऐसी ज्वाला प्रज्वलित की, जिसमें आतताई हुकूमत झुलसने लगी और इन कृतियों पर पाबंदी लगा दी।

इसी तरह लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की **'गीता रहस्य'**, शरद बाबू का उपन्यास **'पथ के दावेदार'** माखनलाल चतुर्वेदी की **पुष्प की अभिलाषा** और पंडित जवाहर लाल नेहरू की **'भारत एक खोज'** को पढ़कर लाखों नौजवानों ने घर-परिवार को छोड़कर खुद को स्वतंत्रता के महासमर के लिए समर्पित कर दिया। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने **'विप्लव गान'** में कहा -

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर को जाए
नाश ! नाश! हां महानाश! ! ! की
प्रलयंकारी आंखें खुल जाए।

इसी तरह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में आव्हान किया -

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।

माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा -

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश- चढ़ाने, जिस पथ पर जावें वीर अनेक।।

प्रख्यात कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता **'झांसी की रानी'** ने अंग्रेजों की चूलें हिला कर रख दी। इस कविता ने नौजवानों में क्रांतिकारी जोश भर दिया –

सिंहासन हिल उठे,
राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई,
फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की,
कीमत सबने पहिचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की
सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी
वह तो झाँसी की रानी थी।।

पं. श्याम नारायण पाण्डेय ने अपनी अमर रचना **'हल्दी घाटी'** में महाराणा प्रताप के घोड़े **'चेतक'** के माध्यम से स्वतंत्रता सेनानियों में जोश भरने का काम किया। इस कड़ी में जयशंकर प्रसाद का नाम भी अग्रणी है। जयशंकर प्रसाद ने देशप्रेम की भावना जगाने के लिए **'अरुण यह मधुमय देश हमारा। जहां पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा,'** लिखा। इसी तरह सुमित्रानंदन पंत ने **'ज्योति भूमि और जय भारत देश'** तथा महाप्राण निराला ने **'भारती! जय विजय करे'** के माध्यम से देशवासियों में उत्साह का संचार किया। इसी तरह शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही त्रिशूल और सियाराम शरण गुप्त जैसे अगणित कवियों और लेखकों ने अपनी कलम के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को प्रज्वलित रखा। रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं ने छात्रों और नौजवानों को बेचैन कर दिया।

बंकिम चन्द्र चटर्जी की देशप्रेम से ओत-प्रोत संस्कृत में रचित गीत **'वन्देमातरम'** स्वतंत्रता की लड़ाई में देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत था। इसे पहली बार 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गाया गया था। इसका पहला अंतरा इस प्रकार है –

वन्दे मातरम!
सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्य श्यामलां मातरम! वन्दे मातरम!
शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम। वन्दे मातरम!

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसी गीत को राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार किया गया। यह गीत आज भी हमारे मन में राष्ट्रीय भावना को जागृत करता है।

स्वतंत्रता के महायज्ञ की ज्वाला को प्रज्वलित करने वाले कवियों और लेखकों की यह श्रृंखला काफी लंबी है। इन कवियों और लेखकों की रचनाएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। उस दौर में रची गई रचनाएं आज भी छात्रों और नवजवानों को प्रेरणा देती हैं और भविष्य में भी देती रहेंगी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

स्वतंत्रता दिवस

राष्ट्र अर्चन का पर्व

डा. नीता सक्सेना

लेखिका परिचय

अवध महिला महाविद्यालय में प्रवक्ता

हमारे तमस और जड़ता की जड़ो में प्राण फूँकने के लिए 1857 की क्रान्ति के चक्रवाती तूफान ने इस पराभव को उखाड़ फेंका। फिर 1947 में हिन्दुस्तान ने आजादी की साँस ली। अपनी जान की परवाह न करते हुए सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

इस 15 अगस्त को भारत को स्वाधीन हुए 74 वर्ष पूरे हो चुके हैं। हम आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं। आज इस वर्ष इस शुभ घड़ी में एक-एक भारतवासी की उफनती, उमड़ती भावनाएं राष्ट्र के आराधन के लिए तत्पर हैं। राष्ट्र अर्चन का मंत्र देते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था 'राष्ट्र अर्चन से श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं'। हमारे लिए एक ही श्रेष्ठम् देवता है राष्ट्रदेवता इसी की अर्चना करना, आराधना करना, हमारा जीवन व्रत होना चाहिए। हमारे देश की स्वाधीनता के विकास के पीछे बलिदान की एक लम्बी गाथा है। इसको जानने के लिए हमें इतिहास के पन्नों को पलटना होगा।

वैसे तो यूरोपीयों का आगमन 15वीं शताब्दी से आरंभ हो गया था, लेकिन 1600 में 100 लोगों का एक समूह व्यापार के उद्देश्य से भारत आया, 1609 में जहाँगीर के शासन काल में हाकिन्स और 1613 में शाहजहाँ के समय में सर टामस रो भारत आये, जिन्होनें गुजरात से लेकर आगरा तक व्यापार करने की अनुमति ले ली। अब यहीं से मुगल दरबार में हस्तक्षेप करने के साथ भारत के प्रान्तों की राजनीति में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया। यह भारत के लिए शुभ संकेत नहीं थे।

धीरे - धीरे 17वीं शताब्दी के अंत तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपनी नीतियों से एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में उभर कर आई और 1757 में प्लासी और 1764 में बक्सर के युदघ) में अंग्रेजों की जीत के परिणाम बहुत घातक सिदध) हुए। जिसने भारत की दिशा - दशा को ही मोड़ दिया । भारत के अधिकांश हिस्सों पर अंग्रेजो का अधिकार स्थापित होने लगा, 100 वर्षों बाद हमारे तमस और जड़ता की जड़ो में प्राण फूँकने के लिए 1857 की क्रान्ति के चक्रवाती तूफान ने इस पराभव को उखाड़ फेंका। फिर 1947 में हिन्दुस्तान ने आजादी की साँस ली। स्वाधीनता के पायदान तक पहुँचने के लिए हजारों लोगों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

स्वाधीनता प्राप्त करने की डगर चुनौतियों एवं विषमताओं से परिपूर्ण थी। क्रान्तिकारी एवं अनेक बड़े नेताओं के मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण आन्दोलन होने लगे बंगाल विभाजन के विरोध में

स्वदेशी आन्दोलन हुआ, जिसने स्वदेशी देश प्रेम की अलख जगाई। राष्ट्रवाद का उदय हुआ। तदुपरांत 1913 में होमरूल आन्दोलन जिसका उद्देश्य भारत को तुरन्त स्वशासन का अधिकार दिया जाए। महात्मा गांधी ने 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटकर पूरे भारत का भ्रमण किया और भारत की स्थिति का गहन अध्ययन किया। तत्पश्चात राजनीति में सक्रियता से भाग लिया। अगस्त 1920 में महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन की शुरुआत की, लेकिन चौरी चौरा की अप्रत्यशित घटना से प्रभावित होकर विशेष परिस्थितियों में गाँधी जी को अपने इस आन्दोलन को स्थागित करना पड़ा। लेकिन, राष्ट्रवादी गतिविधियाँ अनवरत चलती रहीं। आजादी के लक्ष्य को पाने के लिए स्वराज दल का गठन हुआ । पंडित मोतीलाल नेहरु, पंडित जवाहर लाल नेहरु, अबुल कलाम आजाद, सी. राजगोपालाचारी प्रमुख नेता थे। पंडित नेहरु ने कहा था – हमारा एक ही लक्ष्य है स्वाधीनता, स्वाधीनता का अर्थ है– पूर्ण स्वतन्त्रता। सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए गाँधी जी ने अपने अखबार यंग इण्डिया के द्वारा ब्रिटिश हुकुमत के सामने 12 सूत्रेय माँगे रखीं। शर्त यह थी कि अगर मांगें स्वीकार कर ली गई, तो सत्याग्रह नहीं होगा। मुख्यत: यह माँगे थीं– लगान दर पचास रुपये कम करना, भारतीयों को भी शस्त्र का लाईसेन्स देना, सैनिक व्यय कम करना, अहिंसक बन्दियों को छोड़ना। सबसे महत्वपूर्ण मांग थी नमक कर को हटाना। लेकिन अंग्रेज सरकार ने गाँधी जी की माँगों को अनदेखा कर दिया तब गाँधी जी के द्वारा नमक कानून तोड़ने का निर्णय लिया गया। जिसमें जनता जनार्दन का भरपूर सहयोग मिला।

12 मार्च 1930 गाँधी जी अपने अनुयायियों के साथ साबरमती से 241 मील दूर दांडी पहुँचे। प्रो ताराचन्द ने कहा यह यात्रा अद्‌भुत थी। इतिहासकारों ने दांडी मार्च की तुलना नेपोलियन की पेरिस मार्च और मुसोलिनी के रोम मार्च से की है। दांडी में श्रीमती सरोजनी नायडू ने गाँधी जी को (विधि भंजक) कहा, कानून तोड़ने वाले आपका स्वागत है । आंदोलन के तहत 6 अप्रैल को नमक बनाकर नमक कानून भंग कर दिया।

इस तरह सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। हर वर्ग हर आयु के लोगों ने आन्दोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। आन्दोलन की तीव्रता देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने अपना दमन चक्र चला दिया। काँग्रेस के प्रमुख नेताओ को गिरफतार कर लिया गया, प्रदर्शनकारियों पर लाठियाँ, गोलियाँ बरसाई गई। लेकिन अत्याचारों के बावजूद आन्दोलन को रोका ना जा सका।

1930 में इंग्लैण्ड में प्रथम गोलमेज सभा हुई जिसमें काँग्रेस ने भाग नहीं लिया। इस सम्मेलन को बिना दूल्हे की बारात का नाम दे दिया गया। पहली गोल मेज के बाद गाँधी – इरबिन समझौता हुआ। फिर द्वितीय गोल मेज सभा हुई, लेकिन निष्कर्ष वही ढाक के तीन पात। गाँधी– इरबिन समझौते का निरन्तर उल्लघंन होता रहा, 1932 में अंतिम और तृतीय गोल मेज सभा हुई। ब्रिटिश सरकार ने श्वेत पत्र की घोषणा की। यह घोषणा पत्र पूरी तरह प्रतिक्रियावादी था । इसे भारतीयों के द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। इस तरह 1940 तक विभिन्न चरणों को पार करते हुए काँग्रेस ने अपना पूर्ण

स्वतन्त्रता का लक्ष्य निर्धारित कर लिया । गांधी जी ने भी 8 अगस्त 1942 की रात बम्बई में 'अंग्रजों भारत छोड़ो' एवं भारतीयों को 'करो या मरो' का नारा दिया। इस तरह विश्व विख्यात काकोरी घटना के ठीक 17 साल बाद 9 अगस्त 1942 गाँधी जी के आवाहन पर समूचे भारत में **भारत छोड़ो आन्दोलन** आरम्भ हुआ। तन मन धन से लोग आन्दोलन से जुड़ते चले गये। सही मायनों में यह जनता का आन्दोलन था। युवा वर्ग अपनी पढ़ाई, नौकरी छोड़कर जेल जाने को तैयार थे।

1945 में द्वितीय क्ष्व युदध) के बाद ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी जो भारत की आजादी की पक्षधर थी। वायसराय वावेल की मध्यस्था से मुस्लिम लीग और काँग्रेस की बैठकों का दौर चला। हालाँकि सारे प्रयास निष्फल हुए, 1946 में कैबिनेट मिशन भारत आया पुन: काँग्रेस - मुस्लिम लीग के बीच संघीय व्यवस्था एवं समझौतों का अथक प्रयास नकाम रहे। सन् 1947 में वायसराय वेवल की जगह लार्ड माउण्टवेटन को वायसराय नियुक्त किया गया। उन्होंने भी एक बार फिर काँग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं के बीच वार्ता की आखिरी कोशिश की, जो पूरी तरह विफल रही। एक संशय भरी घड़ी थी। खुशी मनाएं या शोक क्योंकि वायसराय के द्वारा की गई घोषणा भारत को आजादी दी जायेगी लेकिन विभाजन के साथ। चार जुलाई को इग्लैंड की संसद द्वारा भारतीय स्वतंत्रा विधेयक पारित हुआ। जुलाई 16 को अधिनियम पारित हुआ, 18 जुलाई को इग्लैंड के सम्राट के हस्ताक्षर द्वारा भारत की स्वतन्त्रता विधेयक पारित हो गया। नार्मन डी पामर ने लिखा है- ब्रिटिश संसद के इतिहास में शायद ही कोई इतना महत्वपूर्ण विधेयक इतने कम समय में व न्यूनतम वाद विवाद के साथ पारित हुआ हो। इस तरह औपचारिक रूप से 15 अगस्त 1947 को भारत दो राष्ट्रों भारत और पाकिस्तान में विभाजित कर दिया गया।

चार जुलाई को इग्लैंड की संसद द्वारा भारतीय स्वतंत्रता विधेयक पारित हुआ। जुलाई 16 को अधिनियम पारित हुआ, 18 जुलाई को इग्लैंड के सम्राट के हस्ताक्षर द्वारा भारत की स्वतन्त्रता विधेयक पारित हो गया। नार्मन डी पामर ने लिखा है- ब्रिटिश संसद के इतिहास में शायद ही कोई इतना महत्वपूर्ण विधेयक इतने कम समय में व न्यूनतम वाद विवाद के साथ पारित हुआ हो।

सन् 1947 की 15 अगस्त की तिथि भारत की दशा और दिशा परिवर्तन की तारीख थी । एक अभूतपूर्व एतिहासिक घटना थी। आज बहुत हर्ष और गौरव का विषय है कि हम आजादी की 75वीं वर्षगाँठ मनाने जा रहे हैं। बड़े ही संघर्ष एवं बलिदानों के बाद हमें आजादी मिली। लेकिन दुर्भाग्य से हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी के मानस पटल से स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास और संघर्ष की गाथा धूमिल हो रही है। इसके लिए नितान्त आवश्यक है कि नायक अमर शहीदों की गाथा के साथ गुमनाम शहीदो के भी पूरे इतिहास को प्रस्तुत किया जाए। स्वतन्त्रता आन्दोलनों की संघर्षपूर्ण घटनाओं तथा वीर सेनानियों के प्रति श्रदध ाभाव तथा भावीपीढ़ी में राष्ट्र प्रेम की भावना को जाग्रत करने के लिए 75 सप्ताह तक आयोजित होने वाला कार्यक्रम निश्चित रूप से सराहनीय है।

यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं,
देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं,
दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥
(अथर्ववेद)

(राष्ट्र के निर्माण के लिए हम सब नागरिक कर्मशील और जागरूक हों। आलसी और प्रमादी व्यक्ति जिस देश में होते हैं वह देश गुलाम हो जाता है)

साक्षात्कार

9 अगस्त 1925

जिसने लिख दी थी अंग्रेजों की विदाई की पटकथा

लखनऊ के काकोरी कांड का नाम स्वाधीनता संग्राम की एक प्रमुख घटना है। इस घटना को अंजाम देने में शचीन्द्रनाथ बख्शी जी का नाम अग्रण्य है। उनके पौत्र श्री राजेन्द्र नाथ बख्शी से डा अपूर्वा अवस्थी ने ग्राम भारती के लिए विशेष साक्षात्कार किया। बातचीत के प्रमुख अंश-

प्रश्न – लखनऊ के काकोरी कांड ने स्वतंत्रता संग्राम में शचीन्द्रनाथनाथ बख्शी ने एक अहम भूमिका निभाई थी। इस घटना के बारे में विस्तार से बताइये?

उत्तर– वर्ष 1925 में युवा क्रांतिकारियों ने संगठित होकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का अंग्रेजों के विरुदध गठन किया। अंग्रेजों के विरुदध संघर्ष के लिए हथियारों की आवश्यकता थी और हथियारों के लिए धन की आवश्यकता थी, धन एकत्रित करने के लिए राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में शचीन्द्रनाथनाथ बख्शी तथा अन्य देशभक्तों ने शाहजहांपुर के कई गांव में डकैती डाली, लेकिन इससे कुछ खास धन संग्रह ना हो सका तथा कई ग्रामीणों की हत्या भी हो गई। तब संगठन ने यह निर्णय लिया कि लखनऊ के निकट सहारनपुर से आने वाली ट्रेन के खजाने को लूटा जाए। इस निर्णय के पश्चात् 10 क्रांतिकारी 9 अगस्त 1925 को राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी स्टेशन पहुंचे और सभी लोग विभिन्न बोगियों में चढ़ गये। शचीन्द्रनाथ बख्शी,अशफाक उल्ला खां और राजेंद्र नाथ लहरी सेकंड क्लास की बोगी में चढ़े। क्योंकि, इन्हीं पर जंजीर खींचकर ट्रेन रोकने की जिम्मेदारी थी। ट्रेन चलने के थोड़ी देर ही बाद इन लोगों ने जंजीर खींची और ट्रेन गार्ड की तरफ बढ़ चले। गार्ड भी इन्हीं की तरफ आ रहे थे। गार्ड को बंदूक की नोक पर शचीन्द्रनाथ बख्शी ने कब्जे में ले लिया और उन्हें

बगल वाली पटरी पर लिटा कर बंदूक तान दी और लोग सरकारी खजाने का बक्सा तोड़ने लगे। कुछ देर बाद बक्सा टूट गया और उसमें से रुपयों का थैला लेकर लोग चले गए तब बख्शी ने कहा आप लोग आगे बढें तब तक मैं गार्ड से निपट लूं। दरअसल तब तक गार्ड ने बक्शी को देख लिया था और उन्हें पहचान गया था। लोगों के आगे जाने पर बख्शी ने गार्ड से पूछा, क्या तुमने मुझे पहचान लिया है? क्यों ना एक कारतूस खर्च कर इस पहचान के झमेले को यहीं खत्म करना ठीक होगा। फिर आगे कोई समस्या नहीं होगी। गार्ड कहने

लगा मैं आपको कभी नहीं पहचानूंगा। बख्शी ने पूछा पुलिस के जोर देने पर भी नहीं। गार्ड ने कहा कि नहीं। पुलिस व किसी के भी जोर देने पर मैं आपको कभी नहीं पहचानूंगा। बख्शी ने पूछा कि क्या भगवान को मानते हैं, गार्ड के हां कहने पर बख्शी ने कहा इस समय हमारे और आपके बीच सिर्फ भगवान ही हैं, क्या भगवान को साक्षी मानकर यह प्रतिज्ञा करते हैं कि आप मुझे कभी नहीं पहचानेंगे। गार्ड ने कहा मैं भगवान को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आपको कभी नहीं पहचानूंगा। तब बक्शी ने कहा कि मैं आपकी जान बख्श देता हूं, मेरे जाने के आधे घंटे के बाद गाड़ी आगे बढ़ाइएगा और यह कहकर बक्शी चले गये।

इस घटना के लगभग डेढ़ साल बाद बख्शी भागलपुर में गिरफतार हुए और उन्हें लखनऊ लाया गया। शिनाख्त परेड में गार्ड को बुलाया गया था, कई लोगों के बीच बख्शी को खड़ा किया गया गार्ड ने आकर दो चक्कर लगाए और कहा इनमें से तो वे नहीं है। उन्हें दोबारा भेजा गया दोबारा भी वह चक्कर लगाने के बाद एक दूसरे आदमी का हाथ पकड़ लिया। इस प्रकार गार्ड के ना पहचानने के कारण बक्शी फांसी से बच गए।

प्रश्न –काकोरी कांड में कुछ देश भक्तों पर मुकदमा चला था और कुछ लोगों को फांसी की सजा दी गई थी। इस बारे में बताइए।.

उत्तर – काकोरी कांड के बाद अनेक लोगों की गिरफतारी हुई और 18 लोगों के विरुदध काकोरी षडयंत्र का मुकदमा चलाया गया। इस मुकदमे के प्रारंभ होने के काफी दिनों बाद अशफाक उल्ला खां दिल्ली में गिरफतार हुए और उनके खिलाफ काकोरी षडङंत्र का पूरक मुकदमा चला। सबसे अंत में बख्शी भागलपुर में गिरफतार हुए और उनको भी काकोरी षडङंत्र के पूरक मुकदमे में सम्मिलित कर लिया गया। काकोरी षडङंत्र के मुकदमे में 3 लोगों को फांसी की सजा दी गई थी। यह तीन लोग थे राम प्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह तथा राजेंद्र नाथ लहरी तथा अन्य 15 लोगों को विभिन्न अवधि की सजा दी गई थी। काकोरी षडङंत्र के पूरक मुकदमे में अशफाक उल्ला खां को फांसी तथा शचीन्द्रनाथ बक्शी को पहचान के अभाव में आजीवन कारावास की सजा दी गई थी।

प्रश्न– मुकदमे के बाद शचीन्द्रनाथ जी कहां – कहां रहे और उनका जीवन कैसे व्यतीत हुआ?

उत्तर –मुकदमे के बाद शचीन्द्रनाथ बख्शी आजीवन कारावास की सजा मिलने के बाद विभिन्न जेलों में रहे। जेल में सी– क्लास में इन लोगों को रखा गया था तथा इन लोगों के साथ चोर उचक्के जैसा व्यवहार किया जा रहा था, जिसके विरुदध बक्शी ने बरेली जेल में रहते हुए आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया। उन्होंने मांग की कि काकोरी की सजा प्राप्त लोगों को राजनीतिक बंदी माना जाए तथा बी–क्लास उपलब्ध कराया जाए। अनशन के 53 दिनों के पश्चात अंग्रेज सरकार को उनकी बात माननी पड़ी। काकोरी षडयन्त्र के समस्त कैदियों को राजनीतिक बंदी मानकर बी–क्लास उपलब्ध कराया गया। सभी प्रकार की सुविधाएं प्रदान की जाने लगीं। उनका विभिन्न जिलों की जेलों में स्थानांतरण होता रहता था।

प्रश्न –राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खां

रोशन सिंह ने इसका जवाब देते हुए अपने भाई को पत्र में लिखा– मेरे लिए किसी प्रकार का दुख ना करो यह समझो कि मुझे अमृत मिल रहा है। मैं अपने गांव नवादा का पहला आदमी हूं जिसे सारी दुनिया ने जाना।

को फांसी की सजा हुई थी। उस समय उनके मन की स्थिति कैसी थी और वह शचीन्द्रनाथ जी से कैसे बयां करते थे ?

उत्तर –इन सभी लोगों को विभिन्न जिलों के जेलों में रखा गया था, जिस कारण इन लोगों की आपस में कोई बातचीत नहीं हो पाती थी यदि एक ही जेल में रखा जाता तभी आपस में बातचीत करना संभव हो पाता। फांसी की सजा 4 लोगों को दी गई थी। चारों राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह तथा राजेंद्र नाथ लहरी इन चारों को 19 दिसंबर 1927 को फांसी देने की तिथि निर्धारित की गई थी। इस बीच अंग्रेजों को सूचना मिली कि राजेंद्र नाथ लहरी गोंडा जेल में रहते हुए जेल से भागने का प्रयास कर रहे हैं। इस सूचना के मिलते ही अंग्रेज सरकार ने राजेंद्र नाथ लहरी को 2 दिन पहले ही 17 दिसंबर 1927 को गोंडा जेल में फांसी दे दी थी। राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में ठाकुर रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में तथा अशफाक उल्ला खां को फैजाबाद जेल में 19 दिसंबर 1927 को फांसी दी गई थी। फांसी के तख्त पर जाते हुए राम प्रसाद बिस्मिल वंदे मातरम तथा भारत माता की जय के नारे लगाते हुए जा रहे थे। फांसी के तख्त पर खड़े होकर बिस्मिल ने वंदे मातरम, भारत माता की जय का उद्घोष किया था तथा कहा, 'आई विश द डाउनफाल आफ ब्रिटिश अंपायर' और फांसी पर झूल गए।

जेल में रहते हुए ठाकुर रोशन सिंह के भाई ने रोशन सिंह को एक पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने फांसी की सजा के लिए दुख प्रकट किया था। रोशन सिंह

ने इसका जवाब देते हुए अपने भाई को पत्र में लिखा- मेरे लिए किसी प्रकार का दुख ना करो यह समझो कि मुझे अमृत मिल रहा है। मैं अपने गांव नवादा का पहला आदमी हूं जिसे सारी दुनिया ने जाना। अशफाक उल्ला खान ने फैजाबाद जेल से अपनी फांसी के 3 दिन पहले बख्शी की दीदी को 16 दिसंबर 1927 को एक पत्र लिखा था।

पत्र में लिखते हैं कि 'आई एम नाट गोइंग टू डाई आई एम गोइंग टू लाइव फार एवर' सोचिए जरा जो फांसी के तख्ते पर झूलने जा रहा है। वह लिखता है कि मैं मरने नहीं हमेशा के लिए जीने जा रहा हूं।

प्रश्न- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी शचीन्द्रनाथ जी क्या सोचते थे, स्वाधीन भारत के बारे में?

उत्तर-उस जमाने में किसी भी क्रांतिकारी ने ही नहीं बल्कि भारत की जनता ने भी यह नहीं सोचा था कि भारत की स्वाधीनता के लिए अपने देश का विभाजन होगा। वास्तव में देश का विभाजन कांग्रेस की दुर्बल नीतियों का परिणाम था। देश का विभाजन होते ही समस्त क्रांतिकारियों का मन दुख से भर गया था। भारत स्वाधीन हो चुका था तथा उसका लक्ष्य पूर्ण हो गया था इस कारण लगभग समस्त क्रांतिकारी राजनीति से संन्यास ले चुके थे।

प्रश्न -मुझे मालूम है कि आप भी कई पुस्तकें और पत्र -पत्रिकाओं में लिखते हैं, कृपया उनके बारे में बताइए।

उत्तर - दरअसल स्वाधीनता के लगभग 90 वर्षों के पश्चात आज भी जनता तथा युवा वर्ग को इन क्रांतिकारियों के योगदान को तथा देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की भावना को जनसाधारण को अवगत कराने के लिए ही लेख व पुस्तके लिखता रहता हूं । अब तक प्रकाशित पुस्तकें इस प्रकार है- 'क्रांति के पथ पर शचीन्द्रनाथ बक्शी' इसी पुस्तक का बंगला अनुवाद 'स्मृतीर बतायन' श्रीमती मुकुल बक्शी ने किया है। इसी पुस्तक का पंजाबी अनुवाद 'मेरे क्रांतिकारी जीवन', मनविंदर सिंह वड़ैच, 'वतन पर मरने वालों का शचीन्द्रनाथ बक्शी ,'क्रांति के पथ पर चलते चलते', 'कुछ कही कुछ अनकही', 'राजेंद्रनाथ बक्शी अपने लिए जिए तो क्या जिए' 'क्रांतिकारियों के पत्रों का दर्पण' और 'क्रांति युग के आदर्श' नाम से पुस्तकें और पत्रिकाएं प्रकाशित हो चुकी है।

नगर पालिका परिषद्, उन्नाव

ग्राम भारती के स्वतंत्रता दिवस

एवं

पंचायत विशेषांक के प्रकाशन पर

उन्नाव नगर की जनता, नगर पालिका कार्यकारिणी एवं समस्त सभासदों की ओर से

हार्दिक शुभकामनाएं

अध्यक्ष अधिशासी अधिकारी

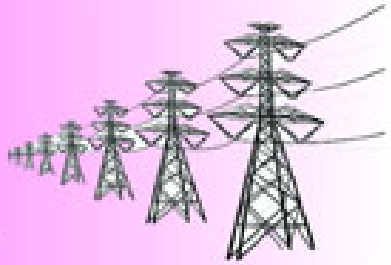

ग्राम भारती के पंचायत विशेष्यांक
के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई
व शुभकामनाएं
स्वतंत्रता दिवस पर सभी नागरिकों को
हार्दिक बधाई व शुभकामनाएें।
प्रियांशु रघुवंशी
ब्लाक प्रमुख–मिर्ज़ापुर, जिला शाहजहाँपुर

O.P.Verma
Prop.
स्वतंत्रता दिवस पर सभी नागरिकों को
हार्दिक बधाई व शुभकामनाऐं।
Laxmi Chand & Company
A-Class Govt.Contractor, UPPCL
Mob.: 9794975156, 9415527618
16B, B Zai Haddaf,
Near-Bachpan School.
Shahjhanpur-242001

स्वतंत्रता दिवस
एवं पंचायत विशेषांक
के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
यशकांत सिंह
ब्लाक प्रमुख राम नगर
अध्यक्ष ब्लाक प्रमुख संघ, बस्ती उत्तर प्रदेश
पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा

स्वतंत्रता दिवस एवं पंचायत विशेषांक
के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
श्रीमती उर्मिला रमेश यादव
ब्लाक प्रमुख
बिलरियागंज, आजमगढ़

प्रबोधिनी शक्ति धाम विंध्याचल में स्वागत है
निवेदक : विभूति कुमार मिश्र

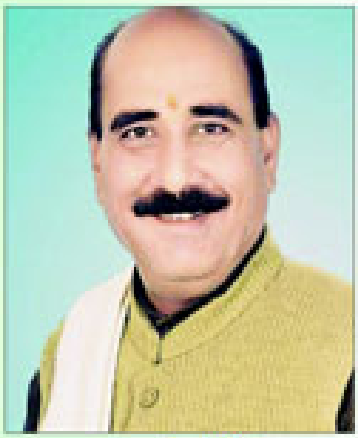

जिला पंचायत, शाहजहाँ ुर

15 अगस्त 2021, स्वतंत्रता दिवस एवं पंचायत विशेषांक

के अवसर पर

हम आजादी के लिए सर्वस्व बलिदान करने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों
व सीमा की रक्षा करने वाले सभी अमर शहीदों को शत-शत नमन करते हैं
और उन्हें दंडवत प्रणाम करते हैं।

वीरेन्द्र पाल सिंह यादव
पूर्व अध्यक्ष

श्रीमती ममता यादव
अध्यक्ष

अजय प्रताप सिंह यादव
पूर्व अध्यक्ष

रामराम वर्मा
ब्लाक प्रमुख-भावनखेड़ा, शाहजहाँपुर

ग्राम भारती के पंचायत विशेषांक
के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई
व शुभकामनाएं
स्वतंत्रता दिवस पर सभी नागरिकों को
हार्दिक बधाई व शुभकामनाऐं।